" दीप हैं जलते रहेंगे, हम प्रलय की आँधियों से अन्त तक लड़ते रहेंगे।"

पूर्वोत्तर भारत शिलचर (असम) से प्रकाशित लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

प्रेरणा भारती

www.preranabharati.com Email: preranabharati@gmail.com

हरिदर्शन HARIDARSHAN

हमारे यहाँ धार्मिक पुस्तक के साथ पूजा-पाठ, हवन-पूजन की सामग्री उचित मूल्य पर प्राप्त करें

मेहरपुर, शिलचर, असम-788015
मो.नं. 9435213512,

Postal Registration No.RN-SC-36/2023-25 (RNI No.) ASSHIN/2016/69550 अंक - 197 वर्ष -11 अषाढ़ शुक्ल दशमी 2082 शनिवार (25 जुलाई 2026) मूल्य-5 रुपये, पृष्ठ-6, preranabharati@gmail.com

असम में बाढ़ की स्थिति बेहद गंभीर, सामान्य से ४०० फीसदी अधिक वर्षा बनी बड़ी वजह: मुख्यमंत्री

असम बाढ़ : ११ जिलों की ७ लाख आबादी प्रभावित, छह और शव मिले

गुवाहाटी, २४ जुलाई (हि.स.)। असम में लगातार बरसात की वजह से बाढ. के हालात बेहद गंभीर हो गये हैं। असम राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एएसडीएमए) की ओर से जारी बीते २३ जुलाई के आंकडों के अनुसार राज्य में ०६ और लोगों की मौत की पुष्टि हुई है। इस तरह राज्य में अब तक मरने वालों की कुल संख्या ४७ हो गयी है। असम में खतरे के निशान से ऊपर बहने वाली नदियों में बुढ़ीदिहिंग (चेनिमारी, खोवांग), दिसांग (नंगलामुराघाट), दिखौ (शिवसागर), धनसिरी (नुमालीगढ), कुशियारा (श्रीभूमि) शामिल हैं।बीते गुरुवार रात हुई भारी बरसात के चलते गुवाहाटी के निचले इलाकों में भारी जल जमाव की स्थिति उत्पन्न हो गयी। सडक़ों पर भारी जल जमाव के चलते यातायात प्रभावित हुआ। जिसके चलते लोगों को अपने घर पहुंचने के लिए अलग-अलग इलाकों में जाम में देर तक फंसना पडा। जल जमाव का असर आज भी गुवाहाटी के विभिन्न हिस्सों में देखा जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा स्वयं बाढ. से सबसे प्रभावित शिवसागर, चराईदेव एवं जोरहाट जिलों का बुधवार को दौरा करने के बाद गुरुवार को गोलाघाट एवं डिब्रूगढ.जिलों में बनाए गये राहत शिविर एवं नुकसान वाले इलाकों का दौरा कर जायजा लिया। उन्होंने प्रभावितों से मुलाकात कर हर संभव मदद का भरोसा दिया। वहीं, असम सरकार के मंत्री बिमल बोरा, केशव महंत, अजंता नेओग, अतुल बोरा एवं विधायक लगातार बाढ. प्रभावित इलाकों का दौरा कर लोगों को राहत पहुंचाने के कार्य में जुटे हुए हैं।बाढ.से वर्तमान समय में कुल ११ जिले प्रभावित हुए हैं। जिसमें गोलाघाट, होजई, कामरूप, चराइदेव, जोरहाट, डिब्रूगढ, शिवसागर, नगांव, कामरूप (मेट्रो), काबी आंगलोंग, तिनसुकिया शामिल हैं। बाढ.से ११ जिलों के ३७ राजस्व मंडलों के कुल

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

मोदी कैबिनेट से पेपर लीक संशोधन विधेयक मंजूर: १० साल की सजा, १० करोड़ जुर्माना, कोर्ट में ३ महीने में फैसला

नई दिल्ली.(एजें) २४ जुलाई : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय कैबिनेट की बैठक में सार्वजनिक परीक्षा कानून में संशोधन को मंजूरी दे दी गई है। सरकार का उद्देश्य प्रतियोगी परीक्षाओं में पारदर्शिता बढाना और पेपर लीक जैसी घटनाओं पर सख्ती से रोक लगाना है. संशोधन विधेयक अगले सप्ताह संसद में पेश किया जा सकता है। इसमें परीक्षा में गडबडी, पेपर लीक और संगठित परीक्षा धोखाधडी से जुडे.मामलों के खिलाफ कानून को और कडा बनाने का प्रस्ताव है।प्रस्तावित संशोधन के तहत पेपर लीक और सार्वजनिक परीक्षाओं में धांधली करने वालों के खिलाफ १० साल तक की सजा का प्रावधान किया गया है। सरकार का मानना है कि कडे.कानूनी प्रावधानों से परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता बढेगी और अभ्यर्थियों का भरोसा मजबूत होगा। यह फैसला ऐसे समय आया है, जब देशभर में पेपर लीक के मामलों को लेकर लगातार सवाल उठ रहे हैं और इस मुद्दे पर सरकार विपक्ष के निशाने पर है। हाल के दिनों में सरकार ने संकेत दिए थे कि परीक्षा प्रणाली को अधिक सुरक्षित बनाने के लिए कानून को और मजबूत किया जाएगा। अब सभी की नजर अगले सप्ताह संसद में पेश होने वाले संशोधन विधेयक पर रहेगी, जिसमें नए प्रावधानों का विस्तृत स्वरूप सामने आएगा। प्रस्तावित विधेयक में पेपर लीक के दोषियों को अब १० साल तक की कठोर कैद और १० करोड.रुपये तक के जुर्माने का सामना करना पड.सकता है। इसके अलावा, पेपर लीक से जुडे.मामलों की सुनवाई के लिए गठित फास्ट ट्रैक कोर्ट को तीन महीने के भीतर फैसला सुनाना होगा, ताकि मामलों का जल्द निपटारा हो सके।

गुवाहाटी में बाढ. की स्थिति की मंत्री कौशिक राय ने की समीक्षा

नालों की व्यापक सफाई और ड्रेनेज रखरखाव के लिए एसओपी तैयार करने के निर्देश

गुवाहाटी, २४ जुलाई (हि.स.)। आवास एवं शहरी कार्य मंत्री कौशिक राय ने शुक्रवार को जनता भवन के ब्लॉक-बी स्थित अपने कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में गुवाहाटी में मौजूदा बाढ.की स्थिति और शहरी जलभराव से निपटने की तैयारियों की समीक्षा के लिए बैठक की।बैठक में मंत्री ने गुवाहाटी नगर निगम (जीएमसी), लोक निर्माण विभाग (सडक़) तथा भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) सहित सभी संबंधित एजेंसियों को शहर के सभी नालों, विशेषकर राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे स्थित नालों की व्यापक सफाई और गाद हटाने का निर्देश दिया, ताकि वर्षा जल की निकासी सुचारु रहे और जलभराव की समस्या कम हो।कौशिक राय ने कामरूप (मेट्रो) के जिला आयुक्त को शहर की ड्रेनेज व्यवस्था के रखरखाव के लिए एक व्यापक मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) तथा वार्षिक रखरखाव कैलेंडर तैयार करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि नालों की सफाई को एक बार की प्रक्रिया नहीं माना जाना चाहिए, बल्कि मानसून से पहले, मानसून के दौरान और बाद में नियमित रूप से तथा आवश्यकता पडने पर प्रत्येक भारी वर्षा के बाद भी सफाई सुनिश्चित की जानी चाहिए।मंत्री ने कहा कि शहरी बाढ.की समस्या से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए सभी संबंधित विभागों के बीच समन्वय, समयबद्ध रखरखाव और जवाबदेही बेहद आवश्यक है। उन्होंने दोहराया कि राज्य सरकार बेहतर समन्वय और सतत प्रयासों के माध्यम से गुवाहाटी को अधिक सुरक्षित, स्वच्छ और जलभराव से निपटने के लिए सक्षम बनाने के लिए प्रतिबद्ध है।बैठक में आवास एवं शहरी कार्य विभाग की आयुक्त एवं सचिव कविता पद्मनाभन तथा कामरूप (मेट्रो) के जिला आयुक्त स्वप्निल पॉल वर्चुअल माध्यम से शामिल हुए। इसके अलावा पीडब्ल्यूआरडी के आयुक्त एवं विशेष सचिव संजीब श्याम, विभाग के सचिव डॉ. जीवन बी, जीएमसी के आयुक्त चिन्मय फूकन, एनएचएआई के अधिकारी तथा अन्य संबंधित विभागों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

न्यू हरंगाजाओ स्टेशन के निकट पटरी धंसने से लुमडिंग-बदरपुर पहाड़ी रेलखंड पर रेल सेवाएं प्रभावित

गुवाहाटी,(एजें) २४ जुलाई। असम के दीमा हसाओ जिले में लगातार हो रही वर्षा के कारण न्यू हरंगाजाओ रेलवे स्टेशन के निकट रेलवे ट्रैक का एक हिस्सा धंस जाने से लुमडिंग-बदरपुर पहाडी रेलखंड पर रेल सेवाएं प्रभावित हो गई हैं।बताया गया है कि यह घटना गुरुवार देर रात न्यू हरंगाजाओ रेलवे स्टेशन से लगभग २० मीटर आगे एक पुल के समीप हुई, जहां ट्रैक संख्या १ और २ के नीचे की जमीन अचानक धंस गई।रेलवे सूत्रों के अनुसार, किलोमीटर ११८/१-३ के बीच लगभग २०० मीटर लंबा रेलमार्ग इस धंसाव से प्रभावित हुआ है। इसके कारण रेल पटरियां टेढी हो गई और यह रेलखंड ट्रेनों के संचालन के लिए असुरक्षित हो गया।घटना की सूचना मिलते ही रेलवे अधिकारी और कर्मचारी मौके पर पहुंचे तथा क्षति का आकलन शुरू कर दिया। हालांकि धंसाव के वास्तविक कारण की आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हुई है, लेकिन अधिकारियों का मानना है कि हाल की लगातार वर्षा के कारण पटरियों के नीचे की मिट्टी खिसक गई।सुरक्षा के दृष्टिकोण से ट्रैक संख्या १ और २ पर रेल परिचालन तत्काल प्रभाव से स्थगित कर दिया गया है।फिलहाल सभी ट्रेनों का संचालन ट्रैक संख्या ३ से केवल १० किलोमीटर प्रति घंटे की सीमित गति से कराया जा रहा है। इसके कारण इस पहाडी रेलखंड पर यात्री एवं मालगाडिय़ों दोनों के परिचालन में विलंब हो रहा है।पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे (एनएफआर) ने क्षतिग्रस्त ट्रैक की मरम्मत और सामान्य रेल परिचालन शीघ्र बहाल करने के लिए युद्धस्तर पर बहाली कार्य शुरू कर दिया है। वरिष्ठ रेलवे अधिकारी स्वयं मौके पर मौजूद रहकर मरम्मत कार्य की निगरानी कर रहे हैं।रेलवे अधिकारियों ने बताया कि स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है तथा सुरक्षित ढंग से जल्द से जल्द नियमित रेल सेवाएं बहाल करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।यात्रियों से अपील की गई है कि इस मार्ग पर यात्रा करने से पहले रेलवे द्वारा जारी आधिकारिक सूचनाओं और अद्यतन जानकारी की जांच अवश्य कर लें।

मेघालय भी गुवाहाटी की बाढ. के लिए जिम्मेदार : प्रद्युत बरदलै

गुवाहाटी, २४ जुलाई (हि.स.)। दिसपुर के विधायक प्रद्युत बरदलै ने शुक्रवार को कहा कि गुवाहाटी में बार-बार आने वाली बाढ.के लिए पडोसी राज्य मेघालय भी जिम्मेदार है। विधायक असम विधानसभा की कार्यवाही में हिस्सा लेने पहुंचने के दौरान सदन के बाहर पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि शहर के विभिन्न इलाकों में अवैध कब्जे लगातार बढ.रहे हैं, जिससे जल निकासी व्यवस्था प्रभावित हो रही है और भारी बारिश के दौरान कृत्रिम बाढ. की स्थिति पैदा हो रही है।बरदलै ने कहा कि राज्य सरकार अवैध अतिक्रमण के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि अवैध कब्जों के कारण ही गुवाहाटी में कृत्रिम बाढ.का स्वरूप लगातार भयावह होता जा रहा है।

असम में 'भूमिहीनों और कटाव पीड़ितों के लिए नया भूमि संशोधन विधेयक जल्द'

सनी रॉय गुवाहाटी, २४ जुलाई: सरकार राज्य में भूमिहीन और आपदा से प्रभावित परिवारों के पक्ष में है। गुरुवार, २४ जुलाई को बजट सत्र में, राज्य के राजस्व मंत्री केशव महंत ने स्पष्ट किया कि सरकार भूमिहीन, नदी कटाव से प्रभावित, देश के विभाजन के समय बांग्लादेश से आए हिंदुओं की रक्षा के लिए भूमि पुलिस-१८८६ और असम भूमि नीति-२०१९ में नई योजनाएं और संशोधन लाने के लिए उत्सुक है और जल्द ही कदम उठाए जाएंगे, विभागीय मंत्री केशव महंत ने प्रिंसिपल रंजीत दास की मौजूदगी में कहा। दूसरी ओर, राज्य के परिवार कल्याण और चिकित्सा और अनुसंधान विभागों में रिक्तियों को जल्द ही भरने की मांग और प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया गया और सरकार अऊए परीक्षा के माध्यम से उचित कदम उठाने के लिए उत्सुक है। इसके अलावा, सरकार ने स्पष्ट किया कि असम भूमि नीति के तहत राज्य में भयानक नदी कटाव, जलमग्न घरों आदि सहित विभिन्न कारणों से भूमिहीनों को पट्टा के साथ जमीन देने के लिए सरकार कदम उठाएगी। यह पता लगाने के लिए पहले से ही एक सर्वेक्षण चल रहा है कि कहां अतिक्रमण हैं, और कितनी सरकारी खास जमीन है, जिसके आधार पर सरकार बहुत जल्द भूमिहीनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का प्रयास कर रही है। इस बीच, काठीगाडा विधानसभा के विधायक कमलाक्ष डे पुरकायस्थ ने एक सवाल के साथ एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें पूछा गया कि सीमा परिसर काठीगाडा में आरआर विलेज था, जिसे सरकार ने पहले ही हटाकर सामान्य खास जमीन में बदल दिया है। हालांकि, विधायक कमलाक्ष ने प्रस्ताव में उल्लेख किया कि काठीगाडा परिसर में ७७०० बीघा से अधिक जमीन दुश्मन संपत्ति/शत्रु भूमि/निष्कासित संपत्ति के रूप में है।

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

बिहार सरकार ने सरकारी अभिलेखों में 'भूमिहार ब्राह्मण' शब्द पर लगाई रोक

प्रे.सं. पटना, २४ जुलाई। बिहार सरकार ने स्पष्ट किया है कि सरकारी दस्तावेजों, जाति प्रमाण पत्रों और अभिलेखों में अब 'भूमिहार ब्राह्मण' के स्थान पर केवल 'भूमिहार' ही दर्ज किया जाएगा। सरकार का कहना है कि 'ब्राह्मण' शब्द जोडने से भ्रम की स्थिति उत्पन्न होती है।विधानसभा के मानसून सत्र में उपमुख्यमंत्री एवं सामान्य प्रशासन मंत्री विजेंद्र प्रसाद यादव ने कहा कि उच्च जाति आयोग की अनुशंसा के अनुसार सवर्ण वर्ग में चार अलग-अलग जातियां ब्राह्मण, राजपूत, भूमिहार और कायस्थ मान्य हैं। इसलिए 'भूमिहार' के नाम में किसी प्रकार का परिवर्तन करने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

सरकार के इस फैसले का भाजपा के ही विधायक जीवेश मिश्रा और विशाल प्रशांत ने विरोध किया। उन्होंने कहा कि १९३१ की जनगणना और कई पुराने सरकारी अभिलेखों में 'भूमिहार ब्राह्मण' दर्ज है, इसलिए दस्तावेजों में एकरूपता बनाए रखी जानी चाहिए।भाजपा विधायक विशाल प्रशांत ने यह भी कहा कि यदि सरकार 'भूमिहार ब्राह्मण' शब्द स्वीकार नहीं करती, तो भूमिहार समाज को अनुसूचित जाति (एससी) का दर्जा देने पर विचार किया जाए।सरकार ने स्पष्ट किया कि उच्च जाति आयोग ने जनवरी २०२५ की बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया था कि 'भूमिहार' जाति का नाम बदलने की कोई आवश्यकता नहीं है और इस संबंध में कोई अनुशंसा भी नहीं की गई है। इस मुद्दे पर विधानसभा में सत्ता पक्ष और भाजपा विधायकों के बीच तीखी बहस देखने को मिली।हालांकि बिहार विधानसभा में आज सरकार द्वारा और इस जाति से ताल्लुक रखने वाले विधायकों से तकरार होने के साथ -साथ कुछ

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

मेघालय की पहाड़ियों से भूस्खलन, गुवाहाटी के कई घरों पर मंडराया खतरा

चुवाहाटी, २४ जुलाई (हि.स.)। महानगर के बशिष्ठ क्षेत्र के स्वर्गपुर में शुक्रवार को भीषण भूस्खलन की घटना सामने आई। मेघालय की पहाडिय़ों से भारी मात्रा में मिट्टी और चट्टानें खिसककर रिहायशी इलाके में आ गिरीं, जिससे कई घर क्षतिग्रस्त हो गए।भूस्खलन के कारण कई मकानों में मिट्टी और पत्थर घुस गए हैं। प्रभावित परिवारों में दहशत का माहौल है, क्योंकि पहाडी से लगातार मलबा खिसकने का खतरा बना हुआ है।स्थानीय लोगों के अनुसार, प्रभावित मकान किसी भी समय ढह सकते हैं। प्रशासन को घटना की सूचना दे दी गई है और स्थिति पर नजर रखी जा रही है।

कालाइन में बडी सफलता: ट्रक से भारी मात्रा में संदिग्ध विदेशी शराब बरामद, दो तस्कर गिरफ्तार

चंद्रशेखर ग्वाला सिलचर। २४ जुलाई। बराक घाटी में अवैध तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत कछार जिले की गुमडा पुलिस को गुरुवार देर शाम बडी सफलता मिली। कालाइनछोडा पुलिस नाका चेकपोस्ट पर नियमित वाहन जांच के दौरान एक ट्रक से भारी मात्रा में संदिग्ध विदेशी शराब बरामद की गई। पुलिस ने इस मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।पुलिस के अनुसार, नाका चेकिंग के दौरान अड-११ऊउ-९०५५ नंबर के ट्रक को रोककर तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान ट्रक से बडी मात्रा में संदिग्ध विदेशी शराब बरामद हुई। प्रारंभिक जांच में आशंका जताई जा रही है कि इस खेप को अवैध रूप से तस्करी के उद्देश्य से ले जाया जा रहा था। मौके से गिरफ्तार किए गए दोनों आरोपियों की पहचान हैलाकांडी जिले के निवासी नाजिम उद्दीन मजूमदार और आजमल हुसैन के रूप में हुई है। बरामद शराब और ट्रक को पुलिस ने जब्त कर लिया है तथा दोनों आरोपियों को गुमडा पुलिस की हिरासत में रखा गया है। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि शराब की यह खेप कहां से लाई गई थी, इसे कहां पहुंचाया जाना था और इस तस्करी गिरोह से जुडे.अन्य लोगों की क्या भूमिका है। मामले में आगे की जांच जारी है।कछार पुलिस की इस कार्रवाई को क्षेत्र में अवैध शराब तस्करी के खिलाफ एक बडी सफलता माना जा रहा है। पुलिस का कहना है कि जांच आगे बढने के साथ इस नेटवर्क से जुडे.और भी महत्वपूर्ण खुलासे होने की संभावना है।

संभावित बाढ. से निपटने की तैयारियों का जिलाधिकारी ने लिया जायजा, आंगनवाडी सेवाओं का भी किया निरीक्षण

रानु दत्त शिलचर, २४ जूलाई। संभावित बाढ. की स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने तथा विभिन्न विभागों की तैयारियों की समीक्षा के उद्देश्य से गुरुवार को कछार जिला प्रशासन ने संयुक्त क्षेत्रीय निरीक्षण अभियान चलाया। इस निरीक्षण का नेतृत्व जिलाधिकारी राहुल कुमार गुप्ता (आईएएस) ने किया। उनके साथ विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे।निरीक्षण दल में अतिरिक्त जिलाधिकारी एवं जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (डीडीएमए) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी रक्तिम बरुआ (एसीएस), अतिरिक्त जिलाधिकारी (समाज कल्याण) जागृति कालोवार (एसीएस), सहायक जिलाधिकारी पीयूष राज (आईएएस), जल संसाधन विभाग के कार्यपालक अभियंता, शिलचर सदर राजस्व चक्राधिकारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, बाल विकास परियोजना अधिकारी (सीडीपीओ) तथा संबंधित विभागों के अन्य अधिकारी शामिल थे।निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने शालचापडा एवं तापांग एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) परियोजना के अंतर्गत संचालित कई आंगनवाडी केंद्रों का दौरा किया। यहां आंगनवाडी कार्यकर्ताओं एवं पर्यवेक्षकों से संवाद कर केंद्रों की तैयारियों, उपलब्ध आधारभूत सुविधाओं, बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति तथा आईसीडीएस सेवाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की समीक्षा की गई। साथ ही आंगनवाडी केंद्रों के बुनियादी ढांचे के सुदृढ़ीकरण और सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार पर विशेष बल दिया गया।इसके बाद जिलाधिकारी ने संभावित बाढ.के मद्देनजर शालचापडा, शुक्तारा और पश्चिम कुमारपाडा क्षेत्र के संवेदनशील नदी तटबंधों तथा स्लुइस गेटों का स्थलीय निरीक्षण किया। इआवश्यक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए तथा किसी भी संभावित आपदा की स्थिति में त्वरित और समन्वित कार्रवाई के लिए सभी विभाग पूर्ण रूप से तैयार रहें। उन्होंने कहा कि लोगों की सुरक्षा और आवश्यक सेवाओं की निर्बाध उपलब्धता प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

हिमालय की रक्षा के बिना विकसित भारत का सपना अधूरा: प्रो. राजीव मोहन पंत

असम विश्वविद्यालय में हिमालय संरक्षण जन आंदोलन बनाने का आह्वान

शिव कुमार,शिलचर, २४ जुलाई। असम विश्वविद्यालय, शिलचर में शुक्रवार को 'विकसित भारत-२०४७ के विजन को साकार करने में हिमालय की भूमिका' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का भव्य शुभारंभ हुआ। विश्वविद्यालय के डिजास्टर रिस्क रिडक्शन (डीआरआर) क्लब द्वारा आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कनेक्टिंग हिमालय के सहयोग से किया जा रहा है। कार्यक्रम को उत्तर पूर्वी परिषद (एनईसी), शिलांग तथा उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय (डोनर), भारत सरकार का सहयोग प्राप्त है। यह संगोष्ठी २४ एवं २५ जुलाई तक चलेगी, जिसमें देशभर के शिक्षाविद, वैज्ञानिक, पर्यावरण विशेषज्ञ, शोधकर्ता और नीति-निर्माता भाग लेकर हिमालय संरक्षण और विकसित भारत-२०४७ के लक्ष्य पर मंथन करेंगे।कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में असम विश्वविद्यालय के कुलपति एवं मुख्य संरक्षक प्रो. राजीव मोहन पंत, हेमवती नंदन बहुगुणा गढवाल विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. अन्नपूर्णा नौटियाल, गुरु चरण विश्वविद्यालय, शिलचर के कुलपति प्रो. निरंजन राय, असम विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. दिलीप चंद्र नाथ तथा आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रो. सुदीप राय सहित अनेक शिक्षाविद एवं शोधकर्ता उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि प्रो. अन्नपूर्णा नौटियाल ने अपने संबोधन में कहा कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी की परिकल्पना इसी वर्ष अप्रैल में नई दिल्ली में आयोजित पाल इंडिया फाउंडेशन की बैठक के दौरान की गई थी, जिसकी अध्यक्षता नीति आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. राजीव कुमार ने की थी। उन्होंने बताया कि केवल २० दिनों के भीतर इतने बडे. राष्ट्रीय आयोजन को सफलतापूर्वक आयोजित करना सभी संस्थाओं और विशेषज्ञों के सामूहिक प्रयास का परिणाम है।उन्होंने कहा कि कोविड-१९ महामारी के दौरान प्रत्यक्ष बैठकें संभव नहीं थीं, लेकिन ऑनलाइन बैठकों के माध्यम से हिमालय से जुडे. विषयों पर लगातार शोध और विमर्श जारी रहा। इसके बाद भारतीय हिमालयी क्षेत्र के चार विश्वविद्यालयों के कुलपतियों ने नीति आयोग के समक्ष विस्तृत प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसके आधार पर ३१ जनवरी को नीति आयोग ने विभिन्न विश्वविद्यालयों, मंत्रालयों और विशेषज्ञों की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की।

प्रो. नौटियाल ने बताया कि इस पहल के बाद विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने लगभग दो करोड.रुपये की शोध परियोजना को स्वीकृति प्रदान की। इसके अंतर्गत हिमालय से जुडे. पाँच प्रमुख विषयों पर व्यापक अध्ययन किया गया। विशेषज्ञों द्वारा समीक्षा और आवश्यक संशोधनों के बाद इन रिपोर्टों को नीति आयोग को सौंपा गया, जिन्हें व्यवहारिक और क्रियान्वयन योग्य सुझावों के कारण काफी सराहना मिली।उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाओं और पर्यावरणीय असंतुलन के कारण हिमालय आज गंभीर संकट से गुजर रहा है। यदि समय रहते ठोस

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

!! नकारात्मक विचारों का आना तय है, परन्तु यह आप पर निर्भर करता है कि आप उन्हे कितना महत्व देते हैं। !!

सम्पादकीय.....

दिल्ली में युवाओं का प्रदर्शन

सिविल सोसाइटी समूहों द्वारा मुद्दा-आधारित गोलबंदी अमूमन तब तक व्यवस्थित बनी रहती है, जब तक उस समय की सरकार यह संकेत देती रहती है कि वह वाजिब चिंताओं को सुनने और उन पर बातचीत करने को तैयार है।दिल्ली में युवाओं के विरोध-प्रदर्शन के बाद हुई हिंसक घटनाएं बिलकुल टाली जा सकती थीं

बीते २० जुलाई को दिल्ली से जो नजारे सामने आये उन्हें टाला जा सकता था - उस दिन नये संसद भवन से कुछ ही दूरी पर प्रदर्शनकारियों को, जिनमें ज्यादातर नौजवान थे, खदेड़ा गया, उन पर आंसू गैस छोड़ी गयी, और लाठीचार्ज किया गया; आरोप है कि कुछ पर पैलेट गन चलायी गयी, जबकि मोबाइल इंटरनेट स्विच ऑफ कर दिया गया और पूरे इलाके के मेट्रो स्टेशन बंद कर दिये गये। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के मार्च से मामला तभी बढ़ा जब पुलिस ने ताकत का सहारा लिया। अगर केंद्र सरकार ने अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठे एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक, जिन्हें दो दिन पहले जबरन अस्पताल में भर्ती कराया गया था, सहित अन्य प्रदर्शनकारियों से पहले ही बात की होती तो टकराव टाला जा सकता। आखिरकार सरकार केंद्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा के जरिए एक मुलाकात के लिए तैयार हुई, लेकिन तब जब हजारों लोग संसद के दरवाजे तक पहुंच चुके थे। उसने काफी देर कर दी। ऑनलाइन तंज के रूप में जन्मे एक आंदोलन का करोडों डिजिटल अनुयायी जुटा लेना और हजारों लोगों को सडक़ों पर उतार लेने में कामयाब रहना सरकार के अपने कामकाज के बारे में बहुत कुछ कहता है, जो ढेरों शिकवा-शिकायतों की वजह बन चुका है। प्रवेश परीक्षाओं में बार-बार पेपर लीक, 'नीट' के दोबारा आयोजन और तीन-भाषा फॉर्मूले पर तकरार ने इस बात को लेकर गहरी चिंताएं पैदा कर दी हैं कि उच्च शिक्षा का संचालन सरकार बिना जवाबदेही के कर रही है।

फिर भी, यह मानना गलती होगी कि यह गुस्सा केवल परीक्षाओं को लेकर है। लगातार बढ़ रहे ये विरोध-प्रदर्शन बेरोजगारी, ठहरे हुए वेतन और बढ़ती कीमतों से त्रस्त देश भर के युवाओं के व्यापक असंतोष की ठोस अभिव्यक्ति में बदल गये हैं। विरोध-प्रदर्शनों की इस तीव्रता का एक कारण यह भी है कि अगर चुनाव नजदीक न हों तो नरेन्द्र मोदी-नीत भाजपा सरकार सिविल सोसाइटी की वाजिब चिंताओं के निवारण को कोई तवज्जो नहीं देती है। पिछले १२ से ज्यादा वर्षों में, गलती सुधारने के कदम अक्सर चुनाव के समय उठाये गये हैं, न कि संसद सत्रों या जनता की बेचैनी के समय।

शिक्षा व्यवस्था पर संकट: सरकार आखिरकार शिक्षामंत्री का इस्तीफा क्यों नहीं लेती?

सौरभ वार्ष्णेय

==========

किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूंजी उसके प्राकृतिक संसाधन नहीं, बल्कि उसकी युवा पीढ़ी होती है। यही युवा देश के भविष्य की नींव रखते हैं। यदि उनके सपनों, परिश्रम और भविष्य के साथ खिलवाड़ होने लगे तो यह केवल एक प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चिंता का विषय बन जाता है। पिछले कुछ समय से देश में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक होने की घटनाओं ने करोड़ों विद्यार्थियों के विश्वास को गहरी ठेस पहुंचाई है। आज लाखों छात्र यह प्रश्न पूछ रहे हैं कि यदि उनकी मेहनत का मूल्य ही सुरक्षित नहीं है, तो उनके वर्षों के संघर्ष का क्या अर्थ रह जाता है?

सरकार जब किसी परीक्षा के सफल आयोजन, नई शिक्षा नीति या शिक्षा क्षेत्र में सुधार का श्रेय लेने में पीछे नहीं रहती, तब परीक्षा प्रणाली की विफलताओं की नैतिक जिम्मेदारी भी उसे स्वीकार करनी चाहिए। लोकतांत्रिक व्यवस्था में जवाबदेही केवल उपलब्धियों तक सीमित नहीं होती; असफलताओं की जिम्मेदारी लेना भी सुशासन का अनिवार्य सिद्धांत है।देश के विभिन्न हिस्सों में बार-बार प्रश्नपत्र लीक होने की घटनाएं केवल तकनीकी त्रुटियां नहीं हैं। यह संकेत हैं कि परीक्षा प्रणाली में कहीं न कहीं गंभीर संस्थागत कमजोरी मौजूद है। हर बार जांच समिति बनती है, कुछ गिरफ्तारियां होती हैं, आश्वासन दिए जाते हैं और फिर कुछ समय बाद वही घटनाएं दोहराई जाती हैं। इस चक्र ने विद्यार्थियों का भरोसा कमजोर किया है।आज देश का छात्र अपने अधिकारों की मांग लेकर सडक़ों पर उतरने को विवश है। राजधानी दिल्ली के जंतर-मंतर सहित अनेक स्थानों पर छात्र शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे हैं। वे लाठीचार्ज, गर्मी, बारिश और कठिन परिस्थितियों के बीच केवल एक मांग कर रहे हैंउनकी मेहनत और भविष्य की रक्षा की जाए। यह विडंबना है कि जिस युवा शक्ति को पुस्तकालयों और प्रयोगशालाओं में होना चाहिए, वह अपने अधिकारों के लिए धरना-प्रदर्शन करने को मजबूर है।

लोकतंत्र में विरोध प्रदर्शन कोई अपराध नहीं है। संविधान प्रत्येक नागरिक को अपनी बात शांतिपूर्ण ढंग से रखने का अधिकार देता है। छात्रों की आवाज़ को राजनीतिक चश्मे से देखने के बजाय उनके दर्द को समझना आवश्यक है। आखिर वे किसी विशेष सुविधा की मांग नहीं कर रहे, बल्कि केवल निष्पक्ष परीक्षा और समान अवसर चाहते हैं।

ऐसे समय में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि क्या शिक्षा मंत्रालय इस पूरे घटनाक्रम की नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करेगा? भारतीय लोकतंत्र में अनेक अवसरों पर मंत्रियों ने नैतिक आधार पर इस्तीफा देकर जवाबदेही की परंपरा स्थापित की है। इस्तीफा किसी व्यक्ति की हार नहीं होता, बल्कि व्यवस्था के प्रति जवाबदेही और लोकतांत्रिक मूल्यों के सम्मान का प्रतीक भी हो सकता है।

हालांकि, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि केवल किसी मंत्री का इस्तीफा समस्या का स्थायी समाधान नहीं है। यदि पूरी परीक्षा प्रणाली में व्याप्त खामियों को दूर नहीं किया गया, तो नया मंत्री आने के बाद भी वही समस्याएं दोहराई जा सकती हैं। इसलिए आवश्यकता व्यापक सुधारों की है।परीक्षा संचालन में अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग, प्रश्नपत्रों की सुरक्षित डिजिटल प्रणाली, दोषियों के खिलाफ त्वरित एवं कठोर कार्रवाई, परीक्षा माफिया पर प्रभावी नियंत्रण तथा पारदर्शी जांच व्यवस्था की स्थापना।

सरकार को यह भी समझना होगा कि आज की पीढ़ी केवल आश्वासन नहीं, बल्कि परिणाम चाहती है। जेन-जी कही जाने वाली यह पीढ़ी तकनीकी रूप से जागरूक है, अपने अधिकारों के प्रति सजग है और जवाबदेही की अपेक्षा रखती है। यदि उनकी मेहनत बार-बार व्यवस्था की कमजोरियों की भेंट चढ़ेगी, तो उनका लोकतांत्रिक संस्थाओं पर विश्वास कमजोर होना स्वाभाविक है।

विपक्ष की भूमिका भी यहां महत्वपूर्ण है। लोकतंत्र में विपक्ष का दायित्व केवल सरकार की आलोचना करना नहीं, बल्कि जनता, विशेषकर युवाओं की आवाज़ को संसद और समाज तक पहुंचाना भी है। यदि छात्र अपनी पीड़ा लेकर सडक़ पर हैं, तो उनकी बात सुनना और उसे उचित मंच देना लोकतांत्रिक दायित्व का हिस्सा है। वहीं, आंदोलन भी पूरी तरह शांतिपूर्ण और संवैधानिक मर्यादाओं के भीतर रहना चाहिए।

आज सबसे बड़ा प्रश्न किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे शिक्षा तंत्र की विश्वसनीयता का है। यदि देश का मेधावी छात्र यह महसूस करने लगे कि सफलता उसकी मेहनत नहीं, बल्कि किसी लीक हुए प्रश्नपत्र या संगठित भ्रष्टाचार से तय होती है, तो यह राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया के लिए गंभीर खतरा है।सरकार के सामने आज अवसर भी है और चुनौती भी। यदि वह पारदर्शिता, जवाबदेही और व्यापक सुधारों का रास्ता अपनाती है, तो विद्यार्थियों का विश्वास पुन: अर्जित किया जा सकता है। लेकिन यदि केवल आश्वासनों और जांच समितियों तक बात सीमित रही, तो असंतोष और अविश्वास की खाई और गहरी होती जाएगी।

यह समय राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में निर्णय लेने का है। विद्यार्थियों का भविष्य किसी भी सरकार, दल या व्यक्ति से बड़ा है। शिक्षा व्यवस्था की विश्वसनीयता बहाल करना केवल सरकार का दायित्व नहीं, बल्कि पूरे लोकतंत्र की जिम्मेदारी है। जवाबदेही तय हो, दोषियों को कठोर दंड मिले, परीक्षा प्रणाली में स्थायी सुधार हों और देश के युवाओं को यह भरोसा मिले कि उनकी मेहनत का सम्मान होगा। क्योंकि एक राष्ट्र का भविष्य तभी सुरक्षित होता है, जब उसके विद्यार्थियों का विश्वास सुरक्षित हो।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक, राजनीतिक विचारक है।

पर्यटन की यादों को ऐसे संजोएं

शिखा चौधरी

जब हम कहीं से घूम कर आते हैं तो हमारे साथ रह जाती हैं सिर्फ यादें। उन यादों को अक्सर हम याद करके उसी यात्रा के सपनों में खो जाते हैं।अक्सर ऐसी यादें समय के साथ धुंधली पडती जाती हैं। इन यादों को हमेशा ताजा बनाये रखने के लिए कुछ उपाय किये जा सकते हैं, इसलिए जब भी किसी नई जगह घूमने जायें तो याद रखें कि आपको उस जगह की याद को जीवंत बनाने के लिए क्या-क्या करना है।

फोटो:-अपनी यात्रा को हमेशा के लिए यादगार बनाये रखने का सबसे बेहतरीन उपाय है तस्वीरें। जब भी कहीं घूमने जायें, अपने साथ कैमरा या अच्छे कैमरे वाला मोबाइल जरूर ले जायें। अपनी यात्रा के दौरान अनमोल पलों की तस्वीरें लें और बाद में इन तस्वीरों की एक फोटो फाइल बना लें। इन तस्वीरों के साथ इनसे जुडी यादों को लिखकर रखें ताकि जब भी आप इन्हें खोलें, आपकी यादें एकदम ताजा हो उठें।

उपहार:- इतना याद रखें कि आप घूमने जा रही हैं शॉपिंग करने नहीं। अपना बजट घूमने-फिरने व विभिन्न स्थानों को देखने के लिए रखें। हां, ऐसी कोई चीज जो आपके शहर में न मिलती हो और यहां मिलती हो, उसे अपनी यात्रा की यादगार समझ कर खरीद सकती हैं। ऐसे स्थानों से कोई यादगार शोपीस या हैंडीक्राफ्ट आदि खरीदें तो अच्छा होगा जो कई वर्षों तक आपकी यात्रा को ताजा बनाए रखेगा।

डायरी:-पहले-लिखने के शौकीनलोगों के लिए अपनी यादें संजोए रखने का बहुत अच्छा साधन है डायरी। जब भी यात्रा पर निकलें, अपने साथ एक डायरी लेकर चलें। फुर्सत के समय अपनी यात्रा के खूबसूरत पलों को तारीख के साथ उस डायरी में नोट कर लें। इसके बाद जब कभी आप बिलकुल अकेला महसूस करेंगी तो उस डायरी को खोलकर पढऩे से पुरानी यादें फिर से ताजा हो जायेंगी।

दोस्त:- जहां भी घूमने जायें, वहां लोगों से परिचय बढ़ाने में देर न करें। नए दोस्त बनाने का बहुत अच्छा माध्यम है यात्रा। ऐसे दोस्तों से यात्रा के बाद भी फोन, ई-मेल आदि द्वारा सम्पर्क बनायें रखें। उनकी शादी या जन्मदिन की सालगिरह आदि पर उन्हें कार्ड वगैरह भेजें। इससे आपकी वर्षों पुरानी यात्रा हमेशा ताजा रहेगी।आप ऐसी जगह से पौधे भी अपने साथ ला सकती हैं जहां आप घूमने गई हैं बशर्ते कि उस पौधे को आपके शहर का वातावरण अनुकूल लगे।

यात्रा के दौरान कुछ पल, कुछ नहीं तो कोई एक या दो पल तो इतने खास होते ही हैं जिसकी स्मृतियां हमारी आंखों से निकलती ही नहीं। वे हर समय हमारी आंखों के सामने पलक झपकते ही आ जाती हैं। भीगी बारिश में गरम चाय के साथ प्याज के पकौडे, उनके साथ किसी ढाबे पर या किसी दिलचस्प नजारे को देखना। (उर्वशी)

आस्था का केंद्र - मुंबई का महालक्ष्मी मंदिर

संजय सिन्हा

भारत में बहुत सारे मंदिर हैं जहाँ आस्था और विश्वास का अदभुत नजारा देखने को मिलता है। इसी क्रम में मुम्बई के महालक्ष्मी मंदिर का नाम अगर न लिया जाये तो बेमानी होगा। मुम्बई का महालक्ष्मी मंदिर अपने आप में काफी अदभुत एवं आस्था का प्रतीक है। देश भर से श्रद्धालु यहाँ दर्शन के लिए पहुँचते हैं और काफी सुकून पाते हैं।मुम्बई के भुलाभाई देसाई मार्ग पर समुद्र के किनारे स्थित इस मंदिर की सुंदरता अवर्णनीय है। यहाँ पहुंचकर ही आपको असीम शांति मिलेगी। इस आकर्षक मंदिर के पीछे भी एक अनोखी घटना है। बताया जाता है कि बहुत समय पहले मुम्बई में वर्ली और मलाबार हिल को जोडऩे के लिए दीवार का निर्माण-कार्य चल रहा था। सैकडों मजदूर इस दीवार के निर्माण-कार्य में लगे हुए थे मगर हर दिन कोई-न-कोई बाधा आ रही थी । इसके कारण ब्रिटिश इंजीनियर काफी परेशान हो गए। इतनी मेहनत के बावजूद भी दीवार कडी नहीं हो पा रही थी। कई बार तो पूरी की पूरी दीवार ढह गई। समस्या को कोई समाधान नहीं मिल रहा था। इसी बीच इस प्रोजेक्ट के मुख्य अभियंता ने एक अनोखा सपना देखा। सपने में माँ लक्ष्मी प्रकट हुई और कहा कि वली में समुद्र के किनारे मेरी एक मूर्ति है। उस मूर्ति को वहां से निकालकर समुद्र के किनारे ही मेरी स्थापना करो। ऐसा करने से हर बाधा दूर हो जाएगी और वली-मलाबार हिल के बीच की दीवार आसानी से खडी हो जाएगी। मुख्य अभियंता को काफी आश्चर्य हुआ। उसने मजदूरों को स्वप्न में बताये गए स्थान पर जाने को कहा और मूर्ति ढूंढ लाने का आदेश दिया। आदेशानुसार कार्य शुरू हुआ। थोडी मेहनत के बाद ही महालक्ष्मी की एक भव्य मूर्ति प्राप्त हुई।यह देखकर स्वप्न पाने वाले अभियंता का शीश नतमस्तक हो गया। पहले वह असमंजस में था कि पता नहीं सपने की बात सत्य है या नहीं लेकिन सपना सच होते ही उसका रोम-रोम श्रद्धा से रोमांचित हो उठा। माता के आदेशानुसार समुद्र के किनारे ही उस मूर्ति की स्थापना की स्थापना की गई और छोटा सा मंदिर बनवाया गया। मंदिर के निर्माण के बाद वली-मालाबार हिल के बीच की दीवार बिना किसी विघ्न-बाधा के खडी हो गई। इसपर प्रोजेक्ट में शामिल लोगों ने सुकून की साँस ली। ब्रिटिश अधिकारियों को भी दैवीय शक्ति पर भरोसा करना पडा।इसके बाद तो इस मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ उमडऩे लगी। सन १८३१ में धाकजी दादा जी नाम के एक व्यवसायी ने छोटे से मंदिर को बडा स्वरुप दिया एवं इसका जीणोद्धार कराया गया। समुद्र के किनारे होने के कारण मंदिर की सुंदरता देखते ही बनती है। यहाँ आपको महालक्ष्मी के अलावा महाकाली एवं महालक्ष्मी की भव्य प्रतिमा भी देखने को मिलेगी। तीनों प्रतिमाओं को सोने की नथ, सोने की चूडिय़ां एवं मोतियो के हार से सजाया गया है। इन प्रतिमाओं के दर्शन से ही चित्त भाव-विभोर हो जाता है। इस मंदिर में महालक्ष्मी को शेर पर सवार दिखाया गया है जो महिषासुर का वध कर रही हैं। दरअसल माता के इन तीनों रूपों को बनाया गया है।आमतौर पर दर्शनार्थी महालक्ष्मी की वास्तविक प्रतिमा नहीं देख पाते हैं क्योंकि वास्तविक प्रतिमा को आवरण से ढँक दिया जाता है। यहाँ के पुजारी ने बताया की असली प्रतिमा को देखने के लिए रात को यहाँ आना पडता है। रात के लगभग साढे. नौ बजे वास्तविक प्रतिमा से आवरण हटाया जाता है। १० से १५ मिनट के बाद पुनः प्रतिमा के ऊपर आवरण चढा दिया जाता है। प्रतिमा के वास्तविक रूप का दर्शन कम हो लोग ही कर पाते हैं। रात में आवरण से ढंकने के उपरांत मंदिर का दरवाजा बंद हो जाता है। सुबह साफ-सफाई के बाद माताओं का अभिषेक होता है और फिर देश भर से आएं दर्शनार्थियों के दर्शनों का सिलसिला शुरू हो जाता है।मंदिर में एक दीवार है जहाँ आपको बहुत सारे सिक्के चिपके हुए मिलेंगे। कहा जाता है कि भक्तगण अपनी मनोकामनाओं के साथ सिक्के चिपकाते हैं यहाँ। ऐसा कहा जाता है कि सच्चे दिल से मांगी गई हर मनोकामनाएं यहाँ पूरी होती हैं। आप भी सिक्के चिपका कर देख सकते हैं। इस दीवार पर आसानी से सिक्के चिपक जाते हैं।मुम्बई के किसी भी जगह से भुलाभाई देसाई मार्ग पहुंचा जा सकता है। इसके लिए आप टैक्सी या बस का सहारा ले सकते हैं। (उर्वशी)

सूर्पनखा का दंड

सर्वेश तिवारी श्रीमुख

श्रीराम और सीता के साथ अपने अभद्र आचरण के कारण नाक कटा कर जब सूर्पनखा रोती कलपती अपने भाइयों की ओर गयी तो लक्ष्मण ने कहा, 'एक बात कहूँ भइया! कहीं हमने इस राक्षसी की नाक काट कर कुछ अनुचित तो नहीं किया? वह जैसी भी हो, पर है तो स्त्री ही न, क्या उसका अपमान करना उचित था?'श्रीराम ने गम्भीरता के साथ उत्तर दिया, 'क्या इतना ही कम है कि हमने उसका वध नहीं किया? उसने सीता पर उसकी हत्या के उद्देश्य से आक्रमण किया था। उसका तो वध किया जाना उचित था। एक गृहस्थ के रूप में हमारा प्रथम दायित्व यही है कि हम अपने कुटुम्बियों पर आई विपत्तियों से उनकी रक्षा करें। सीता की रक्षा के लिए हमें जो कुछ भी करना पडे, वह करना हमारा धर्म ही है। फिर उस राक्षसी की नाक काटने पर ग्लानि क्यों? और एक विवाहित व्यक्ति से उसकी पत्नी के सामने ही विवाह का प्रस्ताव रखना तो यूँ भी नाक कटाने जैसा ही है लक्ष्मण।''किन्तु भइया! वह स्त्री है। और उसने हमारे साथ जो व्यवहार किया वह उसकी संस्कृति के अनुसार उचित ही है, राक्षसों में तो ऐसा होता ही है। वह हमारी मर्यादा नहीं समझती है। फिर उसे दण्ड देना कहाँ तक उचित है?' लक्ष्मण ग्लानि से भरे हुए थे।'सुनो लखन! शत्रु को स्त्री -पुरुष, देव-दानव या सम्पन्न-दरिद्र के आधार पर बांट कर नहीं देखना चाहिए। शत्रु केवल शत्रु होता है और उसके साथ उसी के आधार पर व्यवहार करना चाहिए। और जहाँ तक संस्कृति का प्रश्न है तो उसने अपनी संस्कृति के अनुसार व्यवहार किया तो हमने भी अपनी संस्कृति के अनुसार उत्तर दिया। इसमें कुछ भी बुरा नहीं। यदि किसी पुरुष द्वारा किसी अन्य पुरुष की स्त्री का हरण करना अपराध है तो एक स्त्री द्वारा किसी अन्य स्त्री के पति का हरण भी अपराध ही है। ऐसे अपराधियों को दण्ड मिलना ही चाहिये। सूर्पनखा ने सौभाग्यवती सीता से उसका पति छीनना चाहा था, ऐसे अपराध के लिए हर युग में वही दण्ड होना चाहिए जो आज तुमने दिया है।'लक्ष्मण बडे.भाई की बातों से संतुष्ट दिख रहे थे। राम ने पुनः कहा, 'सुनो लक्ष्मण! सूर्पनखा मायावी है, नाक कटने से उसको अधिक हानि नहीं होने वाली। वह पुनः अपना स्वरूप गढ़ लेगी किन्तु उस पर प्रहार आवश्यक था क्योंकि जिस कार्य के लिए नियति ने हम तीनों को वन में भेजा है उसका प्रारम्भ इसी घटना से होना था। अब अत्याचारी राक्षसों के अधिपति से प्रत्यक्ष युद्ध की घोषणा हो चुकी, सो ग्लानि भूल कर युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।'लक्ष्मण तो सदैव ही तैयार रहते थे, उन्होंने मुस्कुराते हुए अपना धनुष उठा लिया। (उर्वशी)

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक: स्वराज, स्वाभिमान और राष्ट्रजागरण के महानायक

'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा।' यह प्रसिद्ध उद्घोष महान स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, राष्ट्रवादी नेता, प्रभावशाली वक्ता, लेखक, जन-जागरण के अग्रदूत, भारतीय संस्कृति और परंपराओं के समर्थक, युवाओं के प्रेरणास्रोत तथा पत्रकार लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का है। प्रतिवर्ष २३ जुलाई को उनकी जयंती मनाई जाती है। यहाँ पाठकों को बताता चलूँ कि तिलक को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का जनक तथा 'लोकमान्य' की उपाधि प्रदान की गई है। 'लोकमान्य' का अर्थ है-' जिसे जनता द्वारा मान्यता प्राप्त हो।' तिलक की गिनती उन नेताओं में की जाती है जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध जनमत तैयार किया और लोगों को स्वतंत्रता के लिए संगठित किया।

पाठकों को बताता चलूं कि लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्म २३ जुलाई १८५६ को महाराष्ट्र के रत्नागिरी में हुआ था। उनका पूरा नाम केशव गंगाधर तिलक था। उनके पिता गंगाधर रामचंद्र तिलक संस्कृत के विद्वान तथा शिक्षक थे तथा उनकी माता पार्वतीबाई धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। उन्होंने तिलक के व्यक्तित्व में नैतिकता, संस्कार तथा देशप्रेम के बीज बोए। जानकारी मिलती है कि जब तिलक लगभग ९ वर्ष के थे, तब उनकी माता का निधन हो गया था, जिसका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पडा। स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ-साथ तिलक गणित और संस्कृत के अत्यंत मेधावी छात्र थे। उन्होंने अंग्रेजी शिक्षा के साथ-साथ भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीय चेतना पर आधारित शिक्षा का समर्थन किया। वास्तव में सच तो यह है कि उन्होंने शिक्षा को राष्ट्र-जागरण का साधन माना और १८८० में पुणे में न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खगोलशास्त्र और वेदों में भी उनकी गहरी रुचि थी। उन्होंने 'द आर्कटिक होम इन द वेदाज' नामक पुस्तक लिखी, जिसमें वैदिक सभ्यता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। केसरी (मराठी भाषा) तथा द मराठा (अंग्रेजी भाषा) जैसे प्रसिद्ध समाचार पत्रों की

स्थापना भी उनके द्वारा की गई। वास्तव में इन समाचार पत्रों के माध्यम से तिलक ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक शक्ति और जनसमर्थन प्रदान किया। केसरी के माध्यम से उन्होंने ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों की खुलकर आलोचना की तथा किसानों, मजदूरों और सामान्य जनता की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया। इसके माध्यम से उन्होंने स्वदेशी, स्वराज और राष्ट्रीय एकता का संदेश जन-जन तक पहुँचाया। मराठी भाषा में होने के कारण यह सीधे आम लोगों की आवाज़ बन गया। वहीं द मराठा समाचार पत्र के माध्यम से उन्होंने शिक्षित भारतीयों तथा ब्रिटिश शासकों तक भारतीयों की भावनाएँ पहुँचाई।इतना ही नहीं, तिलक ने सार्वजनिक गणेशोत्सव और शिवाजी महोत्सव की शुरुआत कर उन्हें सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता का माध्यम बनाया। दरअसल, उन्होंने १८९३ में गणेशोत्सव को सार्वजनिक रूप दिया ताकि लोग एकत्र होकर राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा कर सकें और अंग्रेजों के विरुद्ध एकजुट हो सकें। इन आयोजनों ने स्वतंत्रता आंदोलन को जन-आंदोलन बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।गौरतलब है कि १९०८ में राजद्रोह के आरोप में तिलक को बर्मा (अब म्यांमार) के मांडले कारागार भेजा गया, जहाँ उन्होंने 'श्रीमद्भगवद्गीता रहस्य' की रचना की। बहुत कम लोग जानते हैं कि ब्रिटिश लेखक वैलेंटाइन चिरोल ने उन्हें 'फादर ऑफ इंडियन अनरेस्ट' अर्थात 'भारतीय अशांति का जनक' कहा था।

वर्ष १९१६ में तिलक ने होमरूल लीग की स्थापना की, जिसका उद्देश्य भारत को स्वशासन दिलाना था। यहाँ पाठकों को जानकारी देना चाहूँगा कि होमरूल आंदोलन का अर्थ है-'अपने देश का शासन स्वयं चलाने का अधिकार।' यह आंदोलन भारत को ब्रिटिश शासन के अधीन रहते हुए भी स्वशासन दिलाने के लिए शुरू किया गया था। तिलक ने महाराष्ट्र और मध्य भारत में तथा एनी बेसेंट ने मद्रास सहित अन्य क्षेत्रों में होमरूल लीग की स्थापना की। इस आंदोलन का उद्देश्य भारतीयों में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाना और स्वराज की माँग को जन-जन तक पहुँचाना था। होमरूल आंदोलन ने देशभर में स्वतंत्रता की भावना को मजबूत किया और भारतीयों को यह विश्वास दिलाया कि वे स्वयं अपना शासन चलाने में सक्षम हैं। इस आंदोलन ने आगे चलकर महात्मा गांधी के नेतृत्व में होने वाले जन आंदोलनों के लिए मजबूत आधार तैयार किया। उल्लेखनीय है कि आप कांग्रेस के पहले जननेता माने जाते हैं और आपने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का समर्थन किया। वास्तव में सच तो यह है कि लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल की तिकडी ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा दी। बहुत कम लोग जानते हैं कि रूसी क्रांति के नेता व्लादिमीर लेनिन ने भी तिलक को भारत के महान क्रांतिकारी नेताओं में गिना था। यहां पाठकों को यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने उन्हें 'आधुनिक भारत का निर्माता' तथा भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उन्हें 'भारतीय क्रांति का जनक' कहा था।रोचक तथ्य यह है कि तिलक ने अपने जीवनकाल में कभी कोई सरकारी पद प्राप्त करने की इच्छा नहीं जताई। उनका पूरा ध्यान राष्ट्र-जागरण, शिक्षा और स्वतंत्रता आंदोलन को मजबूत बनाने पर केंद्रित रहा।

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में तिलक का स्वास्थ्य लगातार गिर रहा था। जुलाई १९२० में वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। उन्हें मलेरिया और अन्य स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं ने घेर लिया था। उपचार के बावजूद उनकी स्थिति बिगडती गई और १ अगस्त १९२० की मध्यरात्रि के बाद (लगभग १२:४० बजे) मुंबई (तत्कालीन बंबई), महाराष्ट्र में ६४ वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

अंत में यही कहूँगा कि लोकमान्य तिलक केवल एक स्वतंत्रता सेनानी नहीं थे, बल्कि पत्रकार, शिक्षाविद्, समाज सुधारक, संगठनकर्ता और राष्ट्रवादी चिंतक भी थे। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को जन-आंदोलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आने वाली पीढ़ियों के लिए संघर्ष, स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति का आदर्श स्थापित किया।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार।

प्रथम पृष्ठ का शेषांश.....

असम में बाढ़ की स्थिति बेहद गंभीर,....

८८३ गांव प्रभावित है। राज्य की कुल ७२१०२४ आबादी एवं २५३७५.४४३ हेक्टेयर कृषि भूमि पानी में डूबी हुई है।राज्य सरकार ने बाढ.से प्रभावित लोगों के लिए कुल १०३ राहत शिविर एवं २५५ राहत वितरण केंद्र समेत कुल ३५८ शिविर स्थापित किये गये हैं। राहत शिविरों में २४१२४ लोग आश्रय लिए हुए हैं। जबकि राहत वितरण केंद्रों पर २३९८६४ गैर-शिविर निवासी राहत प्राप्त कर रहे हैं।

बाढ.के पानी से २३ जुलाई बरामद शवों की संख्या ०६ दर्ज हुई। जिसमें चराईदेव में ०२ और शिवसागर में ०४ शव बरामद हुए। बाढ.से प्रभावित जानवरों की कुल संख्या ३७१६०९ दर्ज हुई है। जिसमें बडे.११०३९३, छोटे ७८१०७ एवं मुर्गी-पालन १८३१०९ दर्ज हुए हैं। इस बीच बाढ.के पानी में कुल १५४ जानवर बह गये। जिसमें जोरहाट जिले में २३ एवं चराईदेव जिले में १३१ पशु पानी में बह गये हैं।बाढ.में राहत एवं बचाय अभियान में एसडीआरएफ, डीडीआरएफ, एनडीआरएफ, पुलिस, अग्निशमन और आपातकालीन सेवाएं (एफ एंड ईएस), सर्कल कार्यालय/स्थानीय प्रशासन, नागरिक सुरक्षा/प्रशिक्षित स्वयंसेवक और अग्निशमन विभाग जुटा हुआ है। वहीं आंशिक रूप से ८ कच्चे घरों को भी गुरुवार को नुकसान होने की जानकारी सामने आई है।इस बीच बाढ.प्रभावित इलाकों में राज्य सरकार ने कुल १७३ मेडिकल टीमों को तैनात किया। इस दौरान ८० नावें भी राहत कार्य में जुटी रहीं। बाढ.के पानी में फंसे ४४५५ लोगों को नावों द्वारा निकाला। वहीं ०५ जानवरों को भी नावों के जरिए सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। बाढ.से बुरी तरह प्रभावित शिवसागर जिले में राहत के कार्य में १ हेलीकॉप्टरों को भी तैनात किया गया।बाढ.प्रभावितों के बीच राज्य सरकार की ओर से चावल (क्विंटल में): २५३९.५२३, दाल (क्विंटल में): ५५१.३८३, नमक (क्विंटल में): १०७.०१६५, मस्टर्ड ऑयल/सरसों का तेल (लीटर में): ८६२०.९२ साथ ही पशुओं का चारा - गेहूं का चोकर (क्विंटल में): २०८९.५७ और पशुओं का चारा - चावल का चोकर (क्विंटल में): ४१.०२ राहत सामग्री बांटी गई।बाढ.से बडे.पैमाने पर सडक़, पुल एवं अन्य आधारभूत ढांचे को नुकसान पहुंचा है। इसको लेकर बजट सत्र में विपक्ष सरकार से चर्चा की मांग कर रहा है। वहीं विधानसभा अध्यक्ष रंजीत दास ने कहा है कि जल्द ही सदन में बाढ.को लेकर विस्तार से चर्चा की जाएगी।

बिहार सरकार ने सरकारी अभिलेखों में '....

सामाजिक और ऐतिहासिक मत भी हैं। जैसे --कृषक ब्राह्मण (अयाचक ब्राह्मण) इतिहासकारों- (जैसे महापंडित राहुल सांकृत्यायन) के अनुसार, भूमिहार मूलत- ब्राह्मण ही थे, जिन्होंने दान लेने (याचक) और पुरोहिताई का कार्य त्यागकर कृषि (अयाचक) को अपना मुख्य व्यवसाय बना लिया। वहीं पौराणिक मत- इस समुदाय के लोग खुद को भगवान परशुराम का वंशज और ब्रह्मर्षि मानते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब भगवान परशुराम ने क्षत्रियों का नाश किया, तब पृथ्वी के संचालन के लिए उन्होंने ब्राह्मणों को भूमि का स्वामित्व सौंपा।राजा हर्षवर्धन का काल-कई इतिहासकारों का मानना है कि सम्राट हर्षवर्धन के शासनकाल (६०६-६४७ ईस्वी) के दौरान, जिन ब्राह्मणों को अग्रहार (दान में दी जाने वाली भूमि या गाँव) प्राप्त हुए और वे कृषि व जमींदारी से जुड़ गए, वे कालांतर में भूमिहार के रूप में पहचाने गये।

असम में 'भूमिहीनों और कटाव पीड़ितों के लिए नया .....

जिसमें से, इसे अभी तक खास भूमि में परिवर्तित नहीं किया गया है या उन लोगों को पट्टा नहीं दिया गया है जो इसका आनंद ले रहे हैं। इसलिए सरकार ने इस बारे में कदम उठाए हैं और बताई गई जमीन के लाभार्थियों को सही नियमों के हिसाब से पट्टा जारी करने समेत पक्के जमीन के अधिकार देने और रिफ्यूजी कैंप और रिफ्यूजी गांवों को सरकारी लिस्ट से हटाने की मांग और प्रस्ताव रखा है। उसके जवाब में संसदीय मंत्री पीयूष हजारिका ने प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए सदन में साफ समाधान वाला जवाब दिया। जब सत्ताधारी पार्टी के विधायकों ने इस बहुत जरूरी कदम पर सहमति जताई तो सदन कुछ देर के लिए हंगामा हो गया। मंत्री पीयूष ने १९५१ और १९७१ में देश के बंटवारे और विदेशों से लोगों की वापसी की बात कही। उनके जवाब के जवाब में विपक्षी विधायक शेरमन अली ने बांग्लादेशियों के पक्ष में खडे.होकर पलटवार किया। हालांकि मंत्री पीयूष की बातों से विवाद खडा हो गया, लेकिन सत्ताधारी पार्टी के विधायकों ने हिंदुओं की रक्षा पर सहमति जताई। कुल मिलाकर, सदन ने इस हफ्ते विकास वाले कदमों और जमीनहीनों के हितों को रक्षा के लिए पूरी योजना के साथ काम खत्म किया।

हिमालय की रक्षा के बिना विकसित भारत का ...

और सतत कदम नहीं उठाए गए तो इसके दुष्परिणाम केवल हिमालयी राज्यों तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि पूरे देश को प्रभावित करेंगे। उन्होंने हिमालय संरक्षण के प्रति युवाओं और मीडिया की सक्रिय भागीदारी पर बल देते हुए कहा कि इस अभियान को जन आंदोलन का रूप देना समय की आवश्यकता है।

इस अवसर पर असम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजीव मोहन पंत ने कहा कि विकसित भारत-२०४७ का सपना तभी साकार होगा, जब हिमालय सुरक्षित रहेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के विकसित भारत के विजन में हिमालय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसी उद्देश्य से इस राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।उन्होंने कहा कि संगोष्ठी में देशभर से ऐसे वैज्ञानिक और विशेषज्ञ शामिल हुए हैं, जिन्होंने अपना पूरा जीवन हिमालय के अध्ययन, संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने के लिए समर्पित किया है। अगले दो दिनों तक ये विशेषज्ञ विद्यार्थियों, शोधार्थियों और प्रतिनिधियों के साथ वैज्ञानिक तथ्यों और पर्यावरणीय चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा करेंगे।प्रो. पंत ने कहा कि विकास आवश्यक है, लेकिन वह प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर होना चाहिए। पहाडी क्षेत्रों में बिहड़ सडक, स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराना जरूरी है, परंतु यदि विकास प्रकृति के विनाश का कारण बन जाए तो उसका खामियाजा पूरी मानवता को भुगतना पडता है।उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, 'जब हम प्रकृति को नष्ट करेंगे, तब प्रकृति भी हमें नष्ट कर देगी।' उन्होंने उत्तराखंड के केदारनाथ की २०१३ की भीषण आपदा, उत्तरकाशी के सिलक्यारा सुरंग हादसे तथा हाल ही में सिक्किम में हुई सुरंग दुर्घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि प्रकृति के साथ अत्यधिक छेडछाड.भी ऐसी घटनाओं का एक प्रमुख कारण हो सकती है।कुलपति ने कहा कि हिमालय का पारिस्थितिकी तंत्र अत्यंत संवेदनशील है। यदि अंधाधुंध निर्माण और पर्यावरणीय दोहन जारी रहा तो हिमनद तेजी से पिघलेंगे, नदियों के जलस्रोत प्रभावित होंगे और गंगा, ब्रह्मपुत्र तथा बराक जैसी जीवनदायिनी नदियों का अस्तित्व भी संकट में पड.सकता है। इसका सीधा असर कृषि, पेयजल, ऊर्जा, जैव विविधता और देश की अर्थव्यवस्था पर पडेग़ा।

उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन का सबसे बडा प्रभाव हिमालय पर दिखाई दे रहा है। अनियमित वर्षा, बादल फटना, भूस्खलन, अचानक बाढ.और बढती गर्मी जैसी घटनाएँ इसी असंतुलन की चेतावनी हैं। उन्होंने कहा कि असम और पूरा उत्तर-पूर्व भी इससे अछूता नहीं है। असम के पर्वतीय क्षेत्र हिमालयी पारिस्थितिकी से जुडे.हैं और हाल के वर्षों में राज्य में आई विनाशकारी बाढ, २०२२ की शहरी बाढ.तथा इस वर्ष की अभूतपूर्व बाढ. कहीं न कहीं हिमालयी क्षेत्र में हो रहे जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय असंतुलन से जुडी हुई हैं।

प्रो. पंत ने कहा कि उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर अथवा सिक्किम में होने वाले पर्यावरणीय परिवर्तन केवल उन्हीं राज्यों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि उनका प्रभाव असम सहित पूरे उत्तर-पूर्व और देश के अन्य हिस्सों पर भी पडता है। उन्होंने नीति-निर्माताओं, वैज्ञानिकों, युवाओं और आम नागरिकों से हिमालय की प्राकृतिक वहन क्षमता (कैरिंग कैपेसिटी) का सम्मान करते हुए पर्यावरण-अनुकूल विकास मॉडल अपनाने का आह्वान किया।उन्होंने कहा कि विकसित भारत-२०४७ का लक्ष्य केवल आर्थिक प्रगति से पूरा नहीं होगा। इसके लिए प्रकृति और विकास के बीच संतुलन स्थापित करना अनिवार्य है। हिमालय का संरक्षण केवल पर्यावरण का प्रश्न नहीं, बल्कि देश की जल सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता और आने वाली पीढिय़ों के सुरक्षित भविष्य से जुडा राष्ट्रीय दायित्व है।दो दिवसीय इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों से आए विशेषज्ञ अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे तथा हिमालय संरक्षण, आपदा जोखिम न्यूनीकरण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण, जल संसाधन प्रबंधन और सतत विकास जैसे विषयों पर व्यापक चर्चा करेंगे। संगोष्ठी से प्राप्त सुझाव विकसित भारत-२०४७ के लक्ष्य की दिशा में नीति निर्माण और पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण आधार साबित हो सकते हैं।

महामना शिक्षण संस्थान में भाऊराव दिवस पर पौधरोपण एवं छात्र संवाद कार्यक्रम

विशेष प्रतिनिधि लखनऊ, २४ जूलाई। महामना शिक्षण संस्थान में भाऊराव दिवस के अवसर पर न्यास समिति के माननीय अध्यक्ष ओम प्रकाश गोयल का आगमन हुआ। इस पावन अवसर पर उनके कर-कमलों से संस्थान परिसर में रुद्राक्ष के पौधे का रोपण किया गया।इसके पश्चात श्री गोयल ने कक्षा ११वीं एवं १२वीं के विद्यार्थियों से संवाद किया और उन्हें जीवन में सफलता प्राप्त करने के महत्वपूर्ण सूत्र बताए। विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों से संबंधित अपनी जिज्ञासाएं उनके समक्ष रखीं, जिनका उन्होंने सहजता एवं प्रभावी ढंग से समाधान किया।संवाद के दौरान उन्होंने अपने तीन पुत्रों और एक पुत्री के जीवन से जुडे.अनुभव साझा करते हुए बताया कि कठिन परिश्रम, अनुशासन, निरंतर प्रयास और लक्ष्य के प्रति समर्पण के बल पर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में सफलता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य के प्रति दृढ. संकल्पित होकर मेहनत करने के लिए प्रेरित किया।कार्यक्रम में संस्थान के सचिव राजीव तिवारी, विनय तिवारी तथा आंतरिक व्यवस्था से जुडे.नरेंद्र जी, वेंकटेश जी एवं दुर्गेद्र जी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे। अंत में विद्यार्थियों के साथ वार्ता एवं विमर्श के पश्चात कार्यक्रम का समापन किया गया।

दोयांग डैम से ज़्यादा पानी छोडा गया; गोलाघाट एडमिनिस्ट्रेशन हाई अलर्ट पर

गोलाघाट:(अर्णव शर्मा) २४ जुलाई : नागालैंड में दोयांग हाइड्रोइलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट के अधिकारियों ने डैम के चार रेडियल गेट खोलकर ज़्यादा पानी छोड.दिया है, जिसके बाद असम के गोलाघाट जलि़ा एडमिनिस्ट्रेशन ने बाढ.के खतरे वाले निचले इलाकों के लिए हाई अलर्ट जारी किया है।अधिकारियों के मुताबिक, कैचमेंट एरिया में लगातार बारिश के बाद बढते जलाशय के लेवल को कंट्रोल करने के लिए चारों रेडियल गेट में से हर एक को ०.७५ मीटर की ऊंचाई तक खोला गया है। डैम की स्ट्रक्चरल सेफ्टी पक्का करने के लिए नॉर्थ ईस्टर्न इलेक्ट्रिक पावर कॉर्पोरेशन (NEEPCO) की देखरेख में कंट्रोल्ड रिलीज. किया जा रहा है।गोलाघाट जलि़ा एडमिनिस्ट्रेशन ने दोयांग और धनसिरी नदी सिस्टम के निचले हिस्सों में रहने वाले लोगों को सावधान रहने की चेतावनी दी है, क्योंकि ज़्यादा डिस्चार्ज निचले इलाकों में मौजूदा बाढ.की स्थिति को और खराब कर सकता है।जलि़े के अधिकारियों ने रेवेन्यू अधिकारियों, डिजास्टर मैनेजमेंट टीमों और इमरजेंसी रिस्पॉन्स एजेंसियों को स्टैंडबाय पर रहने का निर्देश दिया है। बाढ.की आशंका वाले गांवों में रहने वाले लोगों को नदी के किनारे जाने से बचने और प्रशासन की जारी की गई ऑफिशियल एडवाइजरी मानने की सलाह दी गई है।अधिकारियों ने कहा कि पानी छोडऩा एक एहतियाती कदम है जिसका मकसद जलाशय का लेवल सुरक्षित रखना और हाइड्रोइलेक्ट्रिक इंफ्रास्ट्रक्चर को किसी भी तरह के खतरे से बचाना है। प्रशासन नदी के पानी के लेवल पर करीब से नजऱ रख रहा है और अगर हालात बिगडते हैं तो आगे की कार्रवाई करेगा।इस बीच, लोगों से सरकारी नोटिफिकेशन के जरिए अपडेट रहने और अगर खाली करने या इमरजेंसी उपायों की जरूरत पडती है तो लोकल अधिकारियों के साथ सहयोग करने की अपील की गई है।

असम बाढ: शिवसागर सबसे ज़्यादा प्रभावित, मरने वालों की संख्या बढक़र ४७ हुई

शिवसागर:(अर्णव शर्मा) २४ जुलाई : असम में बाढ.की स्थिति शुक्रवार को भी गंभीर रही, पिछले २४ घंटों में छह और मौतों के बाद मरने वालों की संख्या बढक़र ४७ हो गई। असम स्टेट डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी (अडउच्चअ) के अनुसार, ११ जलि़ों में ७.२१ लाख से ज़्यादा लोग प्रभावित हुए हैं, जिससे यह इस मौसम की सबसे गंभीर बाढ.में से एक बन गई है।शिवसागर जलि़ा सबसे ज़्यादा प्रभावित इलाका रहा है, जहाँ लगभग ३.७५ लाख लोग प्रभावित हुए हैं। इसके बाद चराईदेव है, जहाँ लगभग १.८६ लाख लोग प्रभावित हैं, और जोरहाट है, जहाँ लगभग १.१५ लाख लोग बाढ.से प्रभावित हैं। बाढ.से शिवसागर, चराईदेव, जोरहाट, डिब्रूगढ, तिनसुकिया, गोलाघाट, नागांव, होजई, कामरूप, कामरूप (मेट्रो) और कार्बी आंगलोंग जैसे जिलों के ३७ रेवेन्यू सर्कल में फैले ८८३ गांव डूब गए हैं।अधिकारियों ने कहा कि २४,००० से ज़्यादा बेघर लोग अभी १०३ रिलीफ कैंप में रह रहे हैं, जबकि खाना, पीने का पानी और दूसरी जरूरी सप्लाई देने के लिए २५५ रिलीफ डिस्ट्रीब्यूशन सेंटर बनाए गए हैं। डउठ्रऋ, छउठ्रऋ और जलि़ा प्रशासन के लोगों वाली रेस्क्यू टीमें डूबे हुए इलाकों में लोगों को निकालने और राहत का काम जारी रखे हुए हैं।बाढ.से घरों, सडक़ों, तटबंधों, खेती के खेतों और पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को बहुत नुकसान हुआ है। कई नदियां अभी भी खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं, जिससे निचले इलाके पानी में डूबे हुए हैं और आम जिंदग़ी में रुकावट आ रही है।मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा हालात पर करीब से नजऱ रख रहे हैं और उन्होंने अधिकारियों को रेस्क्यू और राहत के काम तेज.करने का निर्देश दिया है, साथ ही यह भी पक्का किया है कि सभी प्रभावित परिवारों तक समय पर मदद पहुंचे। अधिकारियों ने यह भी चेतावनी दी है कि कैचमेंट एरिया में लगातार बारिश से कई जिलों में बाढ. की स्थिति और खराब हो सकती है।हजारों परिवारों के बेघर होने और खेती की बडी जम़ीन के पानी में डूब जाने के कारण, राज्य प्रशासन ने कमजोऱ इलाकों में रहने वालों से अलर्ट रहने और बचाव और पुनर्वास के काम जारी रहने तक सरकारी सलाह मानने की अपील की है।

असम वॉटर रिसोर्स डिपार्टमेंट ने नाजीरा में आई भयानक बाढ.के बाद तटबंध की मरम्मत शुरू की

नाजीरा:(अर्णव शर्मा) २४ जुलाई : असम के शिवसागर जलि़े में नाजीरा के बडे.हिस्से में आई भयानक बाढ.के बाद, वॉटर रिसोर्स डिपार्टमेंट ने दिखो नदी के किनारे टूटे हुए तटबंधों की मरम्मत और उन्हें मजबूत करने का काम शुरू कर दिया है, ताकि आगे कटाव और बाढ.को रोका जा सके।अभी सनबासा गाँव में डिपार्टमेंट के इंजीनियरों की देखरेख में मरम्मत का काम चल रहा है, जिसमें स्थानीय लोग और वॉलंटियर टूटे हुए तटबंध के कमजोर हिस्सों को मजबूत करने के लिए हाथ मिला रहे हैं। बुडबारी सातरा के पास तटबंध टूटने से दिखो नदी का बाढ.का पानी आस-पास के गाँवों में घुस गया था, जिससे घरों, खेती की जम़ीन और पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को बहुत नुकसान हुआ था।हालांकि, लोगों का आरोप है कि तटबंध की बिगडती हालत के बारे में बार-बार दी गई चेतावनियों को सालों से नजऱअंदाज.किया गया था। उन्होंने दावा किया कि बचाव के लिए मरम्मत की मांग करते हुए जलि़ा प्रशासन को दिए गए मेमोरेंडम पर समय पर कार्रवाई नहीं हुई, जिससे अधिकारियों को आपदा आने के बाद ही जवाब देना पडा।शुरू में अधिकारियों ने रेत की बोरियों का इस्तेमाल करके बढते पानी को रोकने की कोशिश की, लेकिन लगातार भारी बारिश और नदी की तेज.धाराओं की वजह से दरार और खराब हो गई, इसलिए कुछ समय के लिए किए गए उपाय काफी नहीं थे। लोगों की चिंता के बाद, डिपार्टमेंट ने अब और कमजोर हिस्सों का पता लगाते हुए मरम्मत का काम शुरू कर दिया है।नाजरिा में हाल ही में आई बाढ.पडोसी नागालैंड में तेज.बारिश और बादल फटने की वजह से आई थी, जिससे ऊपरी असम में बहने वाली नदियाँ तेजी से उफान पर आ गईं। बाढ.से ५७,००० से ज़्यादा लोग प्रभावित हुए, चाय के बागान डूब गए, सडक़ें और तटबंध टूट गए, और पूरे इलाके में आम जिंदग़ी अस्त-व्यस्त हो गई।चल रहे मरम्मत के काम का स्वागत करते हुए, स्थानीय लोगों ने असम सरकार से सिर्फ.कुछ समय की मरम्मत पर निर्भर रहने के बजाय, तटबंध को मजबूत करने और नदी मैनेजमेंट प्रोजेक्ट्स समेत बाढ.को रोकने के परमानेंट उपाय लागू करने की अपील की है।जल संसाधन डिपार्टमेंट ने कहा है कि वह कमजोर तटबंधों की निगरानी करता रहेगा और चल रहे मानसून के मौसम में और बाढ.के खतरे को कम करने के लिए तुरंत मरम्मत का काम करेगा। असम की लंबे समय की बाढ.मैनेजमेंट स्ट्रेटेजी में पूरे राज्य में तटबंधों को मजबूत करना, कटाव-रोधी काम और नदी ट्रेनिंग के उपाय शामिल हैं, हालांकि एक्सपर्ट्स ने बार-बार ज़्यादा टिकाऊ समाधानों की जरूरत पर जोर दिया है।

मानसून की वजह से कनेक्टिविटी कटने पर जंजीमुख गांव के लोगों के लिए नावें लाइफलाइन बन गई हैं

जोरहाट:(अर्णव शर्मा) २४ जुलाई : असम के जोरहाट जिले के जंजीमुख गांव के लोगों के लिए, नावें ही जिंदग़ी रहने का एकमात्र जरिया बन गई हैं क्योंकि मानसून की बाढ.से सडक़ें डूब गई हैं और इलाका अलग-थलग पड. गया है। बुरिदेहिंग नदी में पानी भर जाने से, नॉर्मल ट्रांसपोर्टेशन पूरी तरह रुक गया है, जिससे गांव वालों को आने-जाने, हेल्थकेयर, पढाई, बाजार और दूसरी जरूरी सेवाओं के लिए पूरी तरह से देसी नावों पर निर्भर रहना पड.रहा है।बाढ.के पानी ने घरों, खेतों और गांव की सडक़ों को डुबो दिया है, जिससे सैकडों लोग फंस गए हैं। बच्चे रेगुलर स्कूल नहीं जा पा रहे हैं, जबकि मरीजों और बुजुर्गों को हेल्थकेयर सुविधाओं तक पहुंचने में बहुत मुश्किल हो रही है। दिहाडी मजदूरों और किसानों को भी काफी नुकसान हुआ है क्योंकि आर्थिक गतिविधियां रुकी हुई हैं।

स्थानीय लोगों ने बार-बार आने वाली बाढ.पर चिंता जताई है, और कहा है कि बार-बार अपील करने के बावजूद, गांव में अभी भी हर मौसम में चलने वाली सडक़ कनेक्टिविटी और बाढ.झेलने के लिए जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी है। हर मॉनसून में, नावें ही आने-जाने का एकमात्र भरोसेमंद तरीका बन जाती हैं, जिससे लोगों को काफी खतरा होता है, खासकर इमरजेंसी में।अभी चल रही बाढ.ने असम के बडे.हिस्सों पर असर डाला है, हजारों परिवार बेघर हो गए हैं और कई जलि़ों में राहत का काम जारी है। अधिकारी बाढ.प्रभावित समुदायों को मदद दे रहे हैं, जबकि डिजास्टर रिस्पॉन्स टीमें अलर्ट पर हैं क्योंकि कई इलाकों में नदियाँ खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं।जंजीमुख की स्थिति एक बार फिर इस बात पर जोर देती है कि बाढ.से बचने के पक्के उपायों, बेहतर ग्रामीण कनेक्टिविटी और मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर की तुरंत जरूरत है ताकि कमजोर समुदायों को मॉनसून की बाढ.से होने वाली सालाना तबाही से बचाया जा सके।

जनगणना २०२७ के लिए एन्यूमरेटर और सुपरवाइजऱ की HLO ट्रेनिंग नाहरकटिया कॉलेज में शुरू हुई

डिब्रूगढ:(अर्णव शर्मा) २४ जुलाई : जनगणना २०२७ - हाउसलिस्टिंग और हाउसिंग ऑपरेशन (क्लज) के पहले फेज.के तहत एन्यूमरेटर और सुपरवाइजऱ के लिए तीन दिन का ट्रेनिंग प्रोग्राम २३ जुलाई को नाहरकटिया कॉलेज में शुरू हुआ। यह प्रोग्राम, जो २५ जुलाई तक चलेगा, का मकसद फील्ड स्टाफ को जनगणना के काम को आसानी से और सही तरीके से करने के लिए जरूरी जानकारी और प्रैक्टिकल स्किल देना है।ट्रेनिंग का फोकस एन्यूमरेटर और सुपरवाइजऱ को हाउसलिस्टिंग और हाउसिंग ऑपरेशन को अच्छे से करने के लिए तैयार करना है, ताकि जनगणना की तय गाइडलाइंस और प्रोसीजर का पालन पक्का हो सके। इसी तरह के ट्रेनिंग सेशन डिब्रूगढ.जिले में तय सेंटर पर फेज.में किए जाएंगे।असम के जनगणना ऑपरेशन डायरेक्टर, बिस्वजीत पेगु, खअड, ने उद्घाटन सेशन में हिस्सा लिया और पार्टिसिपेंट्स को संबोधित किया। जनगणना प्रोटोकॉल की सटीकता, निष्पक्षता और सख्ती से पालन करने के महत्व पर जोर देते हुए, उन्होंने जनगणना २०२७ को सफलतापूर्वक लागू करने में गिनती करने वालों और सुपरवाइजऱों की अहम भूमिका पर जोर दिया।शुरुआती प्रोग्राम में बिराज बरुआ, सब-डिवीजनल ऑफिसर (सिविल), नाहरकटिया; जाह्नवी गोस्वामी, एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर और डिस्ट्रिक्ट जनगणना ऑफिसर, डिब्रूगढ; और दूसरे सीनियर सरकारी अधिकारी शामिल हुए।डिब्रूगढ.डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन ने ट्रेनिंग प्रोग्राम को आसानी से चलाने के लिए सभी जरूरी इंतजाम कर लिए हैं, जो जनगणना २०२७ की तैयारियों के तहत आने वाले दिनों में जलि़े भर में अलग-अलग तय सेंटरों पर जारी रहेगा।

जोरहाट एडमिनिस्ट्रेशन ने बाढ.राहत ऑपरेशन तेज.किए; करीब ९८,००० लोग प्रभावित

जोरहाट(अर्णव शर्मा) २४ जुलाई :: जोरहाट डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन ने बाढ़ प्रभावित इलाकों में राहत और बचाव ऑपरेशन तेज.कर दिए हैं, क्योंकि लगातार बारिश से जिले के बडे.हिस्से प्रभावित हो रहे हैं। डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर जय शिवानी की सीधी निगरानी में, अधिकारी प्रभावित लोगों को राहत सामग्री, पीने का साफ पानी, मेडिकल मदद और दूसरी जरूरी सर्विस बिना किसी रुकावट के पहुंचा रहे हैं।ऑफिशियल बाढ.रिपोर्ट के मुताबिक, बाढ. ने पांच रेवेन्यू सर्कल्स्मारियानी, जोरहाट वेस्ट, जोरहाट ईस्ट, टीओक और टिटाबोर के १७७ गांवों को प्रभावित किया है। इस आपदा से ९७,६९० लोग प्रभावित हुए हैं, जिनमें ४०,७४५ पुरुष, ३८,४४५ महिलाएं और १८,५०० बच्चे शामिल हैं। इसके अलावा, ३४,५९२ जानवर प्रभावित हुए हैंजिनमें २३,८८० बडे.जानवर और १०,७१२ छोटे जानवर हैंजबकि ५,५१०.९६ हेक्टेयर खेती की जम़ीन अभी भी पानी में डूबी हुई है।प्रभावित आबादी की मदद के लिए, जलि़ा प्रशासन ने पूरे जलि़े में १६ राहत कैंप और ३४ राहत बांटने के सेंटर बनाए हैं।जिला कमिश्नर जय शिवानी दूर-दराज.और बुरी तरह प्रभावित इलाकों का दौरा करके बाढ.की स्थिति पर खुद नजर रख रहे हैं। एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर, सर्किल ऑफिसर, असिस्टेंट कमिश्नर और अलग-अलग डिपार्टमेंट के अधिकारियों के साथ, उन्होंने जम़ीन पर राहत के उपायों का रिव्यू किया है और अधिकारियों को यह पक्का करने का निर्देश दिया है कि कोई भी प्रभावित परिवार खाना, पीने का पानी, हेल्थकेयर, बच्चों का खाना या जानवरों के चारे से वंचित न रहे। जलि़ा प्रशासन ने बचाव और राहत ऑपरेशन में जलि़ा डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी (DDMA), नेशनल डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स (NDRF), स्टेट डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स (SDRF), सिविल डिफेंस, फायर और इमरजेंसी सर्विसेज, और लोट मंडल, गाँवबुरा और पंचायत सेक्रेटरी समेत फील्ड लेवल के अधिकारियों की मिली-जुली कोशिशों की तारीफ.की है।बांटे जा रहे राहत सामान में चावल, दालें, नमक, सरसों का तेल, बिस्कुट, पीने का पानी, बच्चों का खाना, दवाएँ, मोमबत्तियाँ, ब्लीचिंग पाउडर, सैनिटरी नैपकिन, तिरपाल, पानी साफ.करने के लिए हैलोजन टैबलेट और जानवरों का चारा शामिल हैं।जलि़ा प्रशासन ने लोगों से किसी भी इमरजेंसी या बचाव की जरूरत पडऩे पर जलि़ा इमरजेंसी कंट्रोल रूम से संपर्क करने की अपील की है। लोग तुरंत मदद के लिए टोल-फ्री हेल्पलाइन १०७७, ०३७६-२३००१२४, या मोबाइल नंबर ६०२६५९८९८२ और ७००२०२५४१६ पर कॉल कर सकते हैं। प्रशासन ने भरोसा दिलाया है कि सभी प्रभावित इलाकों में हालात सामान्य होने तक राहत और पुनर्वास की कोशिशें जारी रहेंगी।

डिब्रूगढ.हेल्थ डिपार्टमेंट ने जापानी इंसेफेलाइटिस के खिलाफ लडाई तेज की, बचाव के उपाय मजबूत किए

डिब्रूगढ: (अर्णव शर्मा) २४ जुलाई : जापानी इंसेफेलाइटिस (गए) और एक्यूट इंसेफेलाइटिस सिंड्रोम (AES) को फैलने से रोकने के लिए, डिब्रूगढ.डिस्ट्रिक्ट हेल्थ डिपार्टमेंट ने नेशनल वेक्टर बोर्न डिजीज कंट्रोल प्रोग्राम (NVBDCP) के तहत एक बडा, कई सेक्टर में रोकथाम और कंट्रोल कैंपेन शुरू किया है।जुलाई और अगस्त में गए फैलने के पीक सीजन से काफी पहले, डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन ने इस साल अप्रैल से ही बचाव के उपाय शुरू कर दिए थे। ३० अप्रैल को हुई डिस्ट्रिक्ट टास्क फोर्स (DTF) की मीटिंग में डिस्ट्रिक्ट की स्ट्रेटेजी और एक्शन प्लान को फाइनल किया गया, जिससे हेल्थ डिपार्टमेंट, डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन और दूसरे लाइन डिपार्टमेंट के मिलकर काम करने का रास्ता साफ हुआ।हेल्थ डिपार्टमेंट ने वेक्टर कंट्रोल और पब्लिक हेल्थ अवेयरनेस प्रोग्राम में एजुकेशन डिपार्टमेंट, एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट, रेलवे वर्कशॉप और डिब्रूगढ.म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन को शामिल करके इंटर-डिपार्टमेंटल कोऑर्डिनेशन को मजबूत किया है।पंचायती राज संस्था के सदस्यों के लिए जागरूकता वर्कशॉप, IEC मटीरियल बांटना, बाजारों और दूसरी सार्वजनिक जगहों पर पब्लिक अनाउंसमेंट, और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर बडे.जागरूकता कैंपेन चलाकर गए के लक्षण, जल्दी पता लगाना, समय पर इलाज और बचाव के तरीकों के बारे में बताने के लिए कम्युनिटी की भागीदारी को भी प्राथमिकता दी गई है।बीमारी के खिलाफ इम्यूनिटी बढाने के लिए, जिले ने अपने जापानी इंसेफेलाइटिस रूटीन इम्यूनाइजेशन (JE-RI) प्रोग्राम को और मजबूत किया है। हेल्थ सेंटर, आउटरीच साइट और विलेज हेल्थ, सैनिटेशन एंड न्यूट्रिशन डे (VHSND) सेशन में रेगुलर वैक्सीनेशन सेशन किए जा रहे हैं ताकि यह पक्का किया जा सके कि सभी योग्य बच्चों को गए वैक्सीन मिले, जबकि हेल्थ वर्कर माता-पिता को समय पर वैक्सीनेशन के महत्व के बारे में बताते रहते हैं।सर्विलांस एक्टिविटी के हिस्से के तौर पर, गए वायरस के सर्कुलेशन पर नजऱ रखने के लिए एनिमल हस्बैंड्री डिपार्टमेंट के साथ मिलकर मार्च और अप्रैल के दौरान पूरे जिले में सुअरों का सीरो-सर्विलांस किया गया।वेक्टर कंट्रोल के उपाय भी तेज.कर दिए गए हैं, १०० से ज़्यादा पहचानी गई जगहों पर फॉगिंग की गई है। मच्छरों के पनपने की जगहों की पहचान करने और उन्हें खत्म करने के लिए रेगुलर तौर पर सोर्स रिडक्शन सर्वे किए जा रहे हैं। बाढ.प्रभावित इलाकों और

राहत कैंपों में खास फॉगिंग ड्राइव और जागरूकता कैंप भी चल रहे हैं, ताकि बाढ.के दौरान और उसके बाद गए फैलने का खतरा कम किया जा सके।डिपार्टमेंट ने ९२,९८१ मच्छरदानियों को कीटनाशक से ट्रीट करके लोगों की सुरक्षा को और मजबूत किया है, जिससे मच्छरों से होने वाले इंफेक्शन का खतरा काफी कम हो गया है।जल्दी डायग्नोसिस को बेहतर बनाने के लिए, असम मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल के माइक्रोबायोलॉजी डिपार्टमेंट में गए एडखडअ टेस्टिंग किट उपलब्ध कराई गई हैं, जिससे संदिग्ध मरीजों की समय पर टेस्टिंग और इलाज हो सके।जलि़े के स्वास्थ्य अधिकारियों ने यह भी बताया कि सरकारी नोटिफिकेशन के अनुसार, प्राइवेट अस्पतालों के इंटेंसिव केयर यूनिट (खउण) में इलाज करा रहे अएड और गए मरीज.?१ लाख तक की आर्थिक मदद के हकदार होंगे।अधिकारियों ने कहा कि जलि़े की समय पर प्लानिंग, मिलकर लागू करने और समुदाय के हिसाब से काम करने के तरीके ने जापानी इंसेफेलाइटिस के खिलाफ.डिब्रूगढ.की तैयारी को काफी मजबूत किया है, जिससे यह बीमारी की असरदार रोकथाम और कंट्रोल के लिए एक मॉडल बन गया है।

गुमडा पुलिस की बडी कार्रवाई: लॉरी से भारी मात्रा में विदेशी शराब बरामद, दो तस्कर गिरफ्तार

प्रे.सं. शिलचर, २४ जुलाई : नियमित नाका जांच अभियान के दौरान गुमडा पुलिस ने बडी सफलता हासिल करते हुए एक लॉरी से भारी मात्रा में विदेशी शराब बरामद की है। यह कार्रवाई कछार जिले के कटीगोडा विधानसभा क्षेत्र स्थित कलाइनचडा नाका चेकपोस्ट पर की गई।पुलिस सूत्रों के अनुसार, गुरुवार को एएस-११डीसी-९०५५ पंजीकरण संख्या वाली एक लॉरी को चेकपोस्ट पर रोककर उसकी तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान वाहन से भारी मात्रा में अवैध विदेशी शराब बरामद हुई।इस मामले में हैलाकांडी जिले के निवासी नाजिम उद्दीन मजूमदार तथा आजमल हुसैन को हिरासत में लेने के बाद औपचारिक रूप से गिरफ्तार कर लिया गया।पुलिस ने बरामद विदेशी शराब, संबंधित लॉरी तथा दोनों आरोपियों को गुमडा थाना ले जाकर जब्त कर लिया है। मामले में आवश्यक कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी गई है तथा पुलिस पूरे नेटवर्क की जांच में जुटी हुई है

प्रधानमंत्री से छात्र आंदोलनों पर संवाद और परीक्षा सुधार की मांग

विशेष प्रतिनिधि नई दिल्ली, २४ जूलाई। भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) के राष्ट्रीय प्रवक्ता धर्मेंद्र मलिक ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर छात्र आंदोलनों पर बल प्रयोग के बजाय संवाद स्थापित करने तथा पेपर लीक और भर्ती परीक्षाओं में अनियमितताओं पर ठोस एवं समयबद्ध कार्रवाई की मांग की है।अपने पत्र में मलिक ने कहा कि देश का युवा आंदोलन करने के लिए नहीं, बल्कि अपने भविष्य की चिंता के कारण सडक़ों पर उतरने को मजबूर होता है। उन्होंने कहा कि लाखों छात्र-छात्राएं वर्षों की मेहनत और परिवारों की आर्थिक कठिनाइयों के बाद प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं, लेकिन पेपर लीक और भर्ती प्रक्रियाओं में अनियमितताओं के कारण उनके सपने टूट जाते हैं। उनका कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न राज्यों में प्रतियोगी परीक्षाओं और भर्ती प्रक्रियाओं पर उठे सवालों ने युवाओं का परीक्षा प्रणाली पर विश्वास कमजोर किया है।धर्मेंद्र मलिक ने कहा कि यदि छात्र शांतिपूर्ण ढंग से अपनी बात रखते हैं, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था में उनका उत्तर संवाद के माध्यम से दिया जाना चाहिए, न कि बल प्रयोग से। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र की मजबूती असहमति को सुनने और उसका समाधान करने में है।पत्र में उन्होंने यह भी कहा कि केवल मंत्री बदलने से समस्या का समाधान नहीं होगा। जब तक व्यवस्था में सुधार, जवाबदेही तय करने और परीक्षा प्रणाली को पारदर्शी बनाने की दिशा में ठोस कदम नहीं उठाए जाएंगे, तब तक युवाओं का विश्वास बहाल नहीं हो सकेगा। उन्होंने विपक्ष से भी छात्रों के मुद्दे पर केवल राजनीतिक लाभ लेने के बजाय व्यावहारिक सुधारों के लिए सरकार पर रचनात्मक दबाव बनाने और सहयोग करने का आग्रह किया।प्रधानमंत्री से उन्होंने चार प्रमुख बिंदुओं पर स्पष्ट नीति की मांग की है। इनमें पेपर लीक रोकने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर स्थायी व्यवस्था, पेपर लीक में शामिल संगठित गिरोहों और उनके संरक्षणकर्ताओं पर कठोर कार्रवाई, परीक्षा रद्द होने से छात्रों के समय, धन और मानसिक क्षति की भरपाई के लिए नीति तथा भर्ती एवं परीक्षा प्रणाली को पूरी तरह पारदर्शी और तकनीकी रूप से सुरक्षित बनाने की समयबद्ध योजना शामिल है।धर्मेंद्र मलिक ने अपने पत्र में प्रधानमंत्री से छात्र प्रतिनिधियों के साथ तत्काल संवाद स्थापित करने, पेपर लीक के दोषियों के विरुद्ध बिना किसी राजनीतिक संरक्षण के कठोर कार्रवाई सुनिश्चित करने तथा ऐसी शिक्षा एवं परीक्षा व्यवस्था विकसित करने का आग्रह किया है, जिस पर देश का प्रत्येक छात्र विश्वास कर सके।

दीनदयाल कामधेनु गौशाला समिति गौ संरक्षण, रोजगार और ग्रामीण विकास के लिए कर रही बहुआयामी कार्य

प्रे.सं.मथुरा से विशेष प्रतिनिधि द्वारा २४ जुलाई । दीनदयाल कामधेनु गौशाला समिति पिछले दो दशकों से समाज के गरीब एवं जरूरतमंद लोगों के उत्थान के लिए प्रशिक्षण, उपकरण, रोजगार, छात्रवृत्ति तथा अन्य आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने का कार्य कर रही है। समिति पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय सिद्धांतों के अनुरूप गौ संरक्षण, अनुसंधान एवं विकास तथा अपनी फार्मेसी के माध्यम से पंचगव्य उत्पादों के निर्माण को बढावा दे रही है। मथुरा स्थित दीनदयाल धाम, फारेह में संचालित विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से समिति सैकडों लोगों को रोजगार उपलब्ध करा रही है।समिति द्वारा गौ संरक्षण, संवर्धन एवं देशी नस्ल सुधार के प्रति जनजागरण अभियान चलाए जा रहे हैं। इसके साथ ही प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर गौ आधारित कृषि एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के महत्व से लोगों को अवगत कराया जा रहा है। संस्था का लक्ष्य गौ अनुसंधान केंद्र एवं पशु चिकित्सालय की स्थापना कर पशुओं के उपचार में आयुर्वेदिक एवं होम्योपैथिक पद्धति को बढावा देना है।समिति गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी कार्यरत है। इसके अंतर्गत गोबर से जैविक खाद, मूर्तियां, दीपक, अगरबत्ती तथा अन्य उपयोगी उत्पादों के निर्माण का प्रशिक्षण दिया जाता है। किसानों एवं बेरोजगार युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षित कर गांवों से शहरों की ओर पलायन रोकने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने का प्रयास किया जा रहा है।समिति पंचगव्य आधारित आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण एवं प्रचार-प्रसार पर भी विशेष बल दे रही है। दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र से तैयार औषधियों के महत्व की जानकारी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से दी जाती है। साथ ही बैलों की पारंपरिक शक्ति का उपयोग खेती, चारा प्रबंधन, आटा पिसाई, जल निकासी तथा ऊर्जा उत्पादन जैसे कार्यों में करने के लिए भी किसानों को प्रेरित किया जा रहा है।पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में संस्था वृक्षारोपण, वर्षा जल संरक्षण, भूजल पुनर्भरण तथा भूमि संरक्षण संबंधी कार्यक्रम संचालित कर रही है। इसके अलावा शिक्षित युवाओं को क्षेत्रीय वनौषधियों की पहचान, संरक्षण, मानकीकरण एवं भंडारण का प्रशिक्षण देने के साथ धार्मिक उद्यानों के विकास को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।आयुर्वेद एवं गौ आधारित चिकित्सा के विकास के उद्देश्य से समिति सेमिनार, सम्मेलन तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के साथ साहित्य एवं पत्रिकाओं का प्रकाशन भी करती है। संस्था का उद्देश्य पंचगव्य, पंचकर्म, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा पर आधारित अस्पताल, आयुर्वेदिक महाविद्यालय और योग प्रशिक्षण केंद्रों का संचालन करना तथा आर्थिक रूप से कमजोर रोगियों को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना भी है। इसके अतिरिक्त असाध्य रोगों से पीडति मरीजों तथा दिव्यांगजनों के उपचार, प्रशिक्षण एवं आवासीय सुविधाओं के लिए भी समिति विभिन्न योजनाओं पर कार्य कर रही है। उपरोक्त जानकारी संस्थान के प्रमुख कार्यकर्ता श्री ब्रजेश जी से प्राप्त हुई।

आगामी श्रावण मास के उपलक्ष्य पे जय श्री राम जय श्री कृष्ण सेवा समिति का धार्मिक यात्रा

प्रे.सं. लखीमपुर /सालबनी २५ जुलाई : बीआरबीएनएमपीएल टाउनशिप स्थित जय श्री राम जय श्री कृष्ण सेवा समिति द्वारा आगामी श्रावण मास के उपलक्ष्य पे दो दिवसीय धार्मिक भ्रमण यात्रा श्री धाम मायापुर (इस्कॉन) के लिए रवाना।समिति के अध्यक्ष श्री बी. सी. मंडल एवं सचिव श्री शंकर श्रीवास्तव ने बताया कि यह यात्रा २५ जुलाई शनिवार को प्रस्थान करेगी तथा २६ जुलाई रविवार को वापस लौटेगी। यात्रा में समिति के लगभग ७० सदस्य श्रद्धालु सम्मिलित होंगे।उन्होंने बताया कि यात्रा का उद्देश्य भक्तों को भगवान के धाम के दर्शन कराकर आध्यात्मिक लाभ प्रदान करना है। यात्रा के दौरान नाम संकीर्तन, सत्संग, भजन-कीर्तन एवं सामूहिक पूजा का आयोजन किया जाएगा।समिति का मुख्य उद्देश्य बीआरबीएनएमपीएल टाउनशिप में शांति,सद्भाव,भाईचारा एवं मानव कल्याण के लिए पूजा पाठ के अलावे धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मौके पे भंडारे के आयोजन से भूखे लोगों को खाना खिलाना शामिल है।

लखीमपुर से शिवसागर के लिए बाढ. राहत सामग्री रवाना

प्रे.सं. लखीमपुर २४ जुलाई हाल ही में आई बाढ. से प्रभावित शिवसागर जिले के लोगों की मदद के लिए लखीमपुर वासियों ने मानवता की मिसाल पेश की है। लखीमपुर त्याग क्षेत्र से आज राहत सामग्री लेकर एक ट्रक शिवसागर के लिए रवाना किया गया। इस सामग्री में चावल, दाल, पीने का पानी, दवाइयां, कपडे.और अन्य आवश्यक वस्तुएं शामिल हैं। यह सहयोग लखीमपुर के दानवीर नागरिकों एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों के सहयोग से संभव हो पाया। आयोजनकर्ताओं ने बताया कि संकट की इस घडी. में पीडतिों की मदद करना हमारा कर्तव्य है।

लोक सभा अध्यक्ष ने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को पुष्पांजलि अर्पित की

नई दिल्ली; २३ जुलाई २०२६: लोक सभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला ने आज लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की जयंती के अवसर पर संविधान सदन के केंद्रीय कक्ष में उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।इस अवसर पर संसद सदस्य; पूर्व सदस्य और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को पुष्पांजलि अर्पित की। लोक सभा के महासचिव, श्री उत्पल कुमार सिंह ने भी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को श्रद्धांजलि अर्पित की।लोकमान्य के नाम से प्रसिद्ध श्री बाल गंगाधर तिलक प्रखर राष्ट्रवादी, दूरदर्शी नेता, समाज सुधारक और विद्वान थे। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान आमजन में राजनीतिक चेतना जागृत करने में अग्रणी भूमिका निभाई । वह स्वराज के प्रबल समर्थक थे और उनके प्रेरक आह्वान्ङ्गस्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूँगा!ङ्कने देशवासियों को औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। राष्ट्र के प्रति लोकमान्य तिलक के असाधारण योगदान के सम्मान में संविधान सदन (तत्कालीन संसद भवन) के केंद्रीय कक्ष में उनके चित्र का अनावरण २८ जुलाई १९५६ को तत्कालीन प्रधान मंत्री, पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा किया गया था।

मणिपुर में भारतीय भाषा मंच के इकाई गठन की एक सार्थक पहल

प्रे.सं. नई दिल्ली २४ जुलाई : शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ,नई दिल्ली के भारतीय भाषा मंच,उत्तर -पूर्व द्वारा दिनाँक २३/०७/२०२६ को मणिपुर विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा मंच, मणिपुर इकाई स्थापना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में अध्यक्ष के रूप में प्रो एस इमोबा सिंह, पूर्व मानविकी संकाय प्रमुख एवं भारतीय भाषा समिति, मणिपुर विश्वविद्यालय के समन्वय अधिकारी की उपस्थिति रही।मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय भाषा मंच के राष्ट्रीय सह-संयोजक एवं हिंदी विभाग त्रिपुरा विश्वविद्यालय के आचार्य विनोद कुमार मिश्र मौजूद रहे साथ ही विशिष्ट अतिथि की भूमिका में श्री ब्रम्हाचारीमयुम बिल्की शर्मा, जिला कार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, इम्फाल, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, उत्तर -पूर्व के प्रचार प्रसार संयोजक एवं मेघालय प्रान्त संयोजक डॉ आलोक सिंह उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत स्थानीय मंगलाचरण से हुई।इसके बाद इस कार्यक्रम की संयोजक तथा मणिपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की आचार्य कंचन शर्मा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो एस इमोबा सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि यदि आप अपनी भाषा से प्यार करते हैं तो आप अपने समाज और लोगों से प्यार करते हैं। इसके साथ उन्होंने मातृभाषाओं में उपलब्ध साहित्य को बचाएं रखने का आवाहन किया। इसके बाद प्रो विनोद कुमार मिश्र ने अपने विचार रखते हुए कहा कि भारत की प्रत्येक मातृभाषा में निहित भारतीयता की तलाश करना ही हमारा उद्देश्य है।पूर्वोत्तर में भाषाई एकात्म के सूत्र की पड़ताल करना आज की जरूरत है।भारतीय भाषा मंच ने भारत की सभी भाषाओं की ताकत को तलाशने की लगातार कोशिश की है। आभासी माध्यम से जुड़े भारतीय भाषा मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ राजेश्वर कुमार ने कहा कि भाषाओं का विभाजन यह भाषाओं के लिए ठीक नहीं बल्कि उनका भारतीयकरण होना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि भाषा मंच भारतीय भाषाओं के संवर्धन के लिए कार्य करती है सभी भाषाओं को महत्व देती है। ततपश्चात श्री ब्रम्हाचारीमयुम बिल्की शर्मा ने कहा कि हमें अपनी मातृभाषा के प्रति रुचि को विकसित करना चाहिए क्योंकि हमारी मातृभाषा में ही हमारी संस्कृति, कला दर्शन प्रमुखता पाते हैं। इसके उपरांत डॉ आलोक सिंह ने पूर्वोत्तर में भारतीय भाषा मंच के कार्यों का उल्लेख किया। इस कार्यक्रम में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो अखिलेश शंखधर, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त श्री आर के. भुवनसाना सिंह, वानिकी संकाय के सहायक आचार्य डॉ विवेक वैष्णव आदि भाषाविद, विद्यार्थी, शोधार्थी उपस्थित थे। इसके बाद भारतीय भाषा मंच इकाई गठन को लेकर एक बैठक की गई जिसमें मंच के विस्तार के बारे में चर्चा हुई।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान की बर्खास्तगी की मांग को लेकर सत्याग्रह

अनिल मिश्र/ पटना २४ जुलाई : करीब दो महीने से संपूर्ण देश के छात्र, नवजवानों सहित कॉंग्रेस एवं विपक्षी दलों, सामाजिक कार्यकर्ताओं के लगातार धरना-प्रदर्शन, भूख हडताल, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के नेतृत्व में प्रधानमंत्री के आवास पर धरना, संसद से सडक़ तक चरणबद्ध आंदोलन के बाद भी नीट पेपर लीक, सी बी एस सी परीक्षा परिणाम में भ्रस्टाचार, घोटाला आदि के लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्री को जिम्मेदार मानते हुए इस्तीफे की मांग अनसुनी करने के खिलाफ गयाजी में कॉंग्रेस पाटी के नेताओं, कार्यकर्ताओं ने स्थानीय चौक स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रतिमा के समक्ष सत्याग्रह कर महामहिम राष्ट्रपति से धर्मेंद्र प्रधान की बर्खास्तगी की मांग किया। सत्याग्रह कार्यक्रम की अध्यक्षता गया जिला कॉंग्रेस कमिटी के अध्यक्ष रजनीश कुमार झुंना ने किया, तथा कार्यक्रम में बिहार प्रदेश कॉंग्रेस कमिटी के प्रदेश प्रतिनिधि विजय कुमार मिद्धू, बाबूलाल प्रसाद सिंह, राम प्रमोद सिंह, अमित कुमार उर्फ रिंकू सिंह,युगल किशोर सिंह, विद्या शर्मा, दामोदर गोस्वामी, सैफुल्ल इस्लाम,मदीना खातून,शौकत नवाब अली, रंजीत सिंह, ओंकार शक्ति ,अर्जुन गुप्ता,चंदन कुमार महतो,शंभु शर्मा,बबलू कुमार, परशुराम सिंह,मनोज मालाकार,सोहराब खान शिवनाथ प्रसाद,विनोद श्रीवास्तव,आदि अपने, अपने हाथों में विभिन्न नारों और मांगों के पोस्टर लेकर घंटों सत्याग्रह पर बैठे रहे। इस सत्याग्रह कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि मोदी सरकार के १२ वर्षों के कार्यकाल में विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं के १५० बार पेपर लीक की घटनाएं को सहते, सहते देशभर के छात्रों का गुस्सा अब ज्वालामुखी बन कर फट रहा है, अब देश के छात्र धर्मेंद्र प्रधान को शिक्षा मंत्री के पद से हटाए बिना मानने को तैयार नहीं है। इस बीच इन सभी नेताओं ने ' छात्र-युवा नहीं झुकेगा, राहुल नहीं रुकेगा ' के नारों को बुलंद करते हुए धर्मेंद्र प्रधान को बर्खास्त करने, सदन में इस मुद्दे पर बहस कराने, छात्रों पर जो मुकदमा हुआ है, उसे हटाने, जिन लोगों ने छात्रों को मारा, बेइज्जती किया उन पर कार्रवाई की जाये, मोदी सरकार और उनके गृह मंत्री ने छात्रों के साथ जो व्यवहार किया उसके लिए माफी मागें आदि को पूरा कराने हेतु चरणबद्ध आंदोलन जारी रहेगा। वहीं २५ जुलाई धर्मेंद्र प्रधान का पुतला दहन कर बर्खास्तगी की मांग करेंगे।

लखीमपुर में जनगणना-२०२७ की तैयारियां तेज, २ अगस्त से शुरू होगी सेल्फ एन्यूमरेशन प्रक्रिया

प्रे.सं.लखीमपुर, २४ जुलाई : असम के लखीमपुर जिले में जनगणना-२०२७ को लेकर तैयारियां तेज कर दी गई हैं। जिला प्रशासन ने नागरिकों से इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय अभियान में सक्रिय भागीदारी की अपील की है।

लखीमपुर जिला उपायुक्त द्वारा जारी सूचना के अनुसार २ अगस्त २०२६ से १६ अगस्त २०२६ तक परिवार का कोई भी वयस्क सदस्य ऑनलाइन सेल्फ एन्यूमरेशन कर सकेगा। इसके बाद १७ अगस्त से १५ सितंबर २०२६ तक हाउस लिस्टिंग एवं हाउसिंग सेंसस (क्ढज) फेज-१ के अंतर्गत गणनाकर्मी घर-घर जाकर जानकारी एकत्र करेंगे।जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि नागरिकों द्वारा दी गई जानकारी सुरक्षित रखी जाएगी। सही और पूर्ण जानकारी देकर जनगणना को सफल बनाने की अपील की गई है। देश में डिजिटल जनगणना के तहत स्वयं जानकारी दर्ज करने की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है।

कोकराझार में श्रद्धा और उल्लास के साथ निकली भगवान जगन्नाथ की घर वापसी रथ यात्रा, उमडा आस्था का जनसैलाब

कोकराझार २४ जुलाई :कोकराझार जिले के फकीराग्राम में शुक्रवार को भगवान जगन्नाथ की घर वापसी (बहुड़ा) रथ यात्रा पूरी श्रद्धा, उल्लास और भव्यता के साथ संपन्न हुई। फकीराग्राम के रेलवे कॉलोनी स्थित लोकनाथ बाबा मंदिर से रथ आयोजक समिति के तत्वावधान में आयोजित इस यात्रा में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने बढ.-चढक़र हिस्सा लिया।?दोपहर चार बजे शुरू हुई इस रथ यात्रा में भगवान जगन्नाथ के दर्शन पाने के लिए भक्तों का तांता लगा रहा। पूरा क्षेत्र 'जय जगन्नाथ' के उद्घोष से गूंज उठा और हर कोई भक्ति रस में सराबोर नजर आया। इस दौरान भक्तों में रथ की पवित्र रस्सी को खींचने के लिए होड.मची रही। लोगों की अटूट मान्यता है कि रथ की रस्सी खींचने मात्र से मनुष्य के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। ?फकीराग्राम बाजार के मुख्य मार्गों से होते हुए यह रथ यात्रा अपने निर्धारित पड़ाव से गुजरी। यात्रा सबसे पहले राधा-गोबिंदो मंदिर पहुंची, वहां से पुराणबाजार दुर्गा मंदिर होते हुए अंत में कुमारगंज में जाकर पूरी हुई।?इस पावन अवसर पर स्थानीय निवासियों ने सेवा भाव का अनूठा उदाहरण पेश किया। चिलचिलाती और भीषण गर्मी के बीच यात्रा मार्ग पर जगह-जगह भक्तों के लिए शीतल जल, शरबत और पेयजल की विशेष व्यवस्था की गई थी, जिसकी सभी ने भूरी-भरी प्रशंसा की।?रथ यात्रा के दौरान कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद नजर आया। पूरे मार्ग पर कडी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी, ताकि श्रद्धालु बिना किसी असुविधा के शांतिपूर्ण ढंग से भगवान की एक झलक पा सकें और उत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न हो सके।

हिमाचल में दर्दनाक हादसा: कार पर गिरी चट्टानें, १३ लोगों की मौत

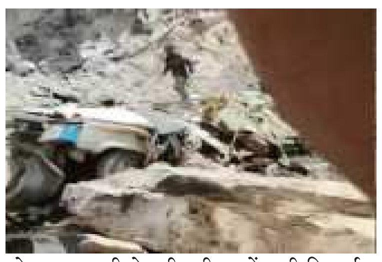

नई दिल्ली. (एजें) २४ जुलाई : हिमाचल प्रदेश के ट्राइबल जिला लाहौल-स्पीति में शुक्रवार को दोपहर के वक्त उदयपुर-किलाड.सडक़ पर कदू नाला के पास चलती गाडी पर लैंडस्लाइड हो गया. इसकी चपेट में टाटा सूमो टैक्सी आ गई. इसमें सवार १३ लोगों की मौके पर मौत हो गई, जबकि दो को सुरक्षित बचाया गया. इसकी पुष्टि भरमौर के विधायक डॉ. जनकराज ने की है.डॉ. जनक राज ने बताया कि टाटा सूमो में कुल १५ लोग सवार थे. सभी पांगी क्षेत्र के रहने वाले हैं और कुल्लू से पांगी लौट रहे थे. इस दौरान कदू नाला के पास पहाडी से बडी बडी चट्टानें गाडी गिर गई. इससे ?क्क-०१रू-२२१० नंबर टाटा सूमो गाडी बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई. उन्होंने बताया कि हादसा इतना भीषण है कि मृतकों के शवों की पहचान भी मुश्किल हो गई है. पहाडी से चट्टानें गिरने के बाद गाडी के पिछले हिस्से में आग लग गई, जिसे मौके पर मौजूद लोगों और जवानों ने बुझाने का प्रयास किया.प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, उदयपुर-किलाड.सडक़ पिछले दिन बारिश के बाद लैंडस्लाइड की वजह से बंद था. इससे सभी लोग अपनी गाडी समेत तिंदी में रुके हुए थे. आज सडक़ बहाल होने के बाद वे पांगी की ओर रवाना हुए थे, तभी कदू नाला के पास अचानक पहाडी से बडी बडी चट्टानें गाडी पर गिरी.भरमौर के विधायक जनक राज ने चंबा और लाहौल-स्पीति के डीसी से राहत एवं बचाव कार्य में तेजी लाने का आग्रह किया है. पुलिस, प्रशासन और बचाव दल घटनास्थल पर अभियान में जुटे हुए हैं. उन्होंने बताया कि मृतकों में एक छह महीने का बच्चा भी शामिल है.फिलहाल मृतकों की आधिकारिक पहचान की पुष्टि नहीं हुई है, हालांकि प्रारंभिक जानकारी के अनुसार सभी मृतक पांगी घाटी के निवासी बताए जा रहे हैं. प्रशासन ने लोगों से अफवाहों से बचने और केवल आधिकारिक जानकारी पर भरोसा करने की अपील की है. लाहौल-स्पीति की डीएसपी रश्मि शर्मा ने बताया कि पुलिस टीम मौके के लिए रवाना हो चुकी है. विस्तृत जानकारी जुटाई जा रही है. स्क्क लाहौल स्पीति शिवानी मेहला ने बताया कि गाडी में सवार १५ लोगों में से १३ की मौत हो गई है.

नीट परीक्षा में कथित अनियमितता को लेकर लखीमपुर में कांग्रेस का विरोध प्रदर्शन

प्रे.सं.लखीमपुर, २४ जुलाई : नीट परीक्षा में कथित अनियमितताओं को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग करते हुए लखीमपुर जिला कांग्रेस ने विरोध प्रदर्शन किया।,प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और परीक्षा प्रक्रिया की निष्पक्ष जांच की मांग उठाई।,इस दौरान पुलिस ने लखीमपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष गंगाज्योति ताये गाम तथा कांग्रेस के मीडिया पैनलिस्ट रातुल बोरा को हिरासत में लेकर बाद में गिरफ्तार किया।कांग्रेस नेताओं का आरोप है कि नीट परीक्षा में हुई कथित गडब़डिय़ों से लाखों छात्रों का भविष्य प्रभावित हुआ है। वहीं, पुलिस ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए कार्रवाई किए जाने की बात कही।,

मजदूरों का हित व सुरक्षा भाजपा सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता: सतीश नागर पंचकूला में आयोजित हुई श्रम कल्याण बोर्ड की बैठक

प्रे.सं. चंडीगढ २४ जुलाई । हरियाणा के कामगार मजदूरों के कल्याण और उनकी समस्याओं के समाधान को लेकर पंचकूला में एक महत्वपूर्ण राज्यस्तरीय बैठक संपन्न हुई। सेक्टर-४ स्थित श्रम कल्याण बोर्ड के कार्यालय में आयोजित इस उच्चस्तरीय बैठक की अध्यक्षता बोर्ड के चेयरमैन श्री रोहताश जांगडा ने की। इस बैठक में प्रदेशभर की विभिन्न श्रमिक यूनियनों के पदाधिकारियों, सदस्यों और प्रशासनिक अधिकारियों ने हिस्सा लिया, जिसमें मुख्य रूप से मजदूरों के हितों की रक्षा और सरकार द्वारा चलाई जा रही जनकल्याणकारी योजनाओं को धरातल पर उतारने को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।

बैठक में मुख्य रूप से उपस्थित रहे भाजपा मजदूर प्रकोष्ठ हरियाणा के प्रदेश अध्यक्ष व अखिल भारतीय गुर्जर सेवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष सतीश नागर उल्लावास ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यह एक पूर्णतः प्रदेशस्तरीय कामगार बैठक थी, जिसका मुख्य उद्देश्य सरकार और जमीनी स्तर पर काम करने वाले मजदूरों व उनकी यूनियनों के बीच सीधा संवाद स्थापित करना था। बैठक में श्रम विभाग के कमिश्नर, बोर्ड के आला अधिकारी और विभिन्न श्रमिक संघों के दिग्गज नेता शामिल हुए। अधिकारियों और यूनियन लीडर्स की इस संयुक्त मौजूदगी के कारण मजदूरों की प्रशासनिक और व्यावहारिक, दोनों ही तरह की समस्याओं पर खुलकर बात हो सकी। इस महामंथन के दौरान भाजपा सरकार द्वारा असंगठित और संगठित क्षेत्र के मजदूरों के लिए चलाई जा रही वित्तीय सहायता, स्वास्थ्य बीमा और बच्चों की शिक्षा से जुडी योजनाओं की समीक्षा की गई। बैठक में इस बात पर विशेष जोर दिया गया

कि सरकारी योजनाओं का लाभ पात्र मजदूरों तक बिना किसी देरी और बिचौलियों के सीधे पहुंचना चाहिए। इसके साथ ही यूनियन लीडर्स ने कामगारों को कार्यस्थलों पर आने वाली व्यावहारिक दिक्कतों, पेंडिंग क्लेम्स और सुरक्षा मानकों से जुडी समस्याओं को चेयरमैन और कमिश्नर के समक्ष रखा, जिस पर प्रशासनिक अधिकारियों ने त्वरित कार्रवाई का आश्वासन दिया। इस मौके पर सतीश नागर उल्लावास ने कहा कि सरकार लगातार मजदूर वर्ग के आर्थिक और सामाजिक उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है और इस बैठक का उद्देश्य यही सुनिश्चित करना था कि कोई भी पात्र मजदूर सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे। बैठक के समापन पर चेयरमैन श्री रोहताश जांगडा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे श्रमिक यूनियनों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर गंभीरता से काम करें। विभिन्न यूनियनों के पदाधिकारियों ने इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि इस तरह के सीधे संवाद से न केवल मजदूरों का मनोबल बढता है, बल्कि प्रशासनिक अडच़नें भी दूर होती हैं।

दुमदुमा में धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग को लेकर उतरे छात्रा-छात्राएं उतरे सडक़ों पर

दुमदुमा प्रे.ं.सं. २४ जुलाई :-- इन दिनों पूरे देश में परीक्षा को ठीक से आयोजित न करा पाने वाली सरकार के विरुद्ध नाराज हैं और आंदोलन हो रहा है । केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे और शिक्षा व्यवस्था में बडे. बदलाव की मांग को लेकर आज दुमदुमा में कई छात्र-छात्राएं सडक़ों पर उतर आए। आज सुबह दुमदुमा के बीचोंबीच स्थित गांधी मूर्ति के सामने सैकडों छात्र छात्राओं ने'धर्मेंद्र प्रधान होशियार', 'भाजपा सरकार मुर्दाबाद' जैसे नारों के साथ जोरदार प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारियों ने भाजपा सरकार और केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। विरोध कर रहे छात्रों ने ठीक से परीक्षा आयोजित न करा पाने वाली सरकार द्वारा छात्रों पर किए गए हमले की भी कडी निंदा की। प्रदर्शन में शामिल छात्रों ने जंतर-मंतर पर हो रहे विरोध प्रदर्शन को अपना पूरा समर्थन दिया और इस आंदोलन को आगे बढाने की बात कही।

एडीएचडी
ध्यान की कमी

लापरवाही, अस्थिरता, हर समय उछलकूद और आवेग बच्चों में होना सामान्य बात है। लेकिन यदि बच्चा अधिकतर समय ऐसा ही रहता है तो यह एडीएचडी का असर भी हो सकता है। अनुमान के अनुसार भारत में प्रत्येक 20 में से 1 बच्चे में एडीएचडी के लक्षण देखने को मिलते हैं। चूंकि लक्षण सामान्य हैं, ऐसे में समय पर जांच व उपचार की कमी समस्या को बढ़ा देती है, बता रहे हैं

बच्चों में एडीएचडी के मामले तेजी से सामने आ रहे हैं। मानसिक व व्यवहार संबंधी समस्याओं के प्रति बढ़ती जानकारी का ही प्रभाव है कि माता-पिता अब बच्चों की समस्याओं को गंभीरता से ले रहे हैं। बावजूद बड़ी संख्या ऐसे लोगों की है, जो नहीं जानते कि उनके बच्चे या फिर वे खुद एडीएचडी के शिकार हैं। एडीएचडी यानी एटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसॉर्डर। यू बच्चों में लापरवाही, असावधानी, अति सक्रियता व आवेग का होना सामान्य है, लेकिन इन लक्षणों वाला हर बच्चा एडीएचडी का शिकार हो, यह जरूरी भी नहीं। इतना अवश्य है कि एडीएचडी से पीड़ित बच्चों में यह व्यवहार व विकास संबंधी डिसॉर्डर अधिक गंभीर और लंबे समय तक देखने को मिलता है। यही वजह है कि इसकी जांच के लिए बच्चे के व्यवहार का लंबे समय तक अध्ययन किया जाता है।

बच्चों में यह समस्या अकसर 3-4 वर्ष की आयु में प्रारंभ होती है। 12 वर्ष से छोटे बच्चों में कभी भी इसके लक्षण देखने को मिल सकते हैं। एडीएचडी बच्चों में पाया जाने वाला मस्तिष्क संबंधी डिसॉर्डर है, जिसके कारण वे अपने व्यवहार और आवेग पर काबू नहीं रख पाते हैं। एसोचैम के अनुसार वर्ष 2005 में इसके मामले 4ञ थे, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 11ञ हो गये हैं। इन वर्षों में एडीएचडी से प्रभावित बच्चों की संख्या में 175ञ तक की वृद्धि देखने को मिली है। एक अनुमान के अनुसार बड़े शहरों में 20 में से 1 बच्चा एडीएचडी से पीड़ित है। दुनियाभर में लड़कियों की अपेक्षा लड़कों के इससे प्रभावित होने के मामले अधिक होते हैं।

एडीएचडी के कारण

एडीएचडी क्यों होता है, इसके निश्चित कारणों के बारे में नहीं पता, पर कुछ संभावित कारण इस प्रकार हैं...

आनुवंशिकता: कुछ परिवारों में पीढ़ी दर पीढ़ी बच्चों में ऐसे जींस का ट्रांसफर होता है, जिससे मस्तिष्क के उन हिस्सों के ऊतक पतले हो जाते हैं, जो ध्यान से संबंधित होते हैं। कई बार समय के साथ ये ऊतक सामान्य हो जाते हैं, जिससे स्थिति में सुधार आता है।

पर्यावरणीय कारक: गर्भावस्था में सिगरेट व शराब का सेवन करने वाली महिलाओं के बच्चों में एडीएचडी की आशंका अधिक होती है। छोटी उम्र में लगातार लेड की उच्च मात्रा के संपर्क में रहने से भी ये हो सकता है।

लक्षण और लक्षण

इनअटेंटिव बच्चों के लक्षण इस प्रकार हैं...
- आसानी से ध्यान भटकना, एक काम करते-करते दूसरा शुरू कर देना, एकाग्र नहीं हो पाना। रोजमर्रा के कामों को भूलना। कार्य को व्यवस्थित ढंग से न कर पाना।
- मनपसंद काम करते हुए भी कुछ मिनटों में बोर होना।
- होमवर्क व अन्य कार्यों को समय पर पूरा न कर पाना। अपने खिलौने, कॉपी, पेन, पैंसिल, रबर आदि खो देना।
- बात को ध्यान से न सुनना, अधिक दिमागी काम को देर तक न कर पाना।

अतिसक्रिय यानी हाइपरएक्टिव बच्चों के लक्षण है-
- अपनी सीट पर लगातार हिलना-डुलना।
- बिना रुके लगातार व अधिक बोलना।
- खाना खाते समय या स्कूल में बिना हिले-डुले बैठने में समस्या होना। लगातार यहां-वहां घूमना।

अधिक आवेग में रहने वाले बच्चों के प्रमुख लक्षण हैं
- बहुत अधीर होना। प्रश्न से पहले उत्तर बोलना। दूसरों की बातचीत को बीच में रोकना।
- अपनी भावनाएं खुलकर अभिव्यक्त करना।
- बिना सोचे-समझे कोई काम करना।
- खेल में अपनी बारी की प्रतीक्षा करने में समस्या होना।

चीनी और फूड एडिटिव : कई विशेषज्ञ हाइपरएक्टिविटी को अधिक मात्रा में रिफाइंड शुगर व फूड एडिटिव का सेवन करने से जोड़ते हैं। हालांकि इस संबंध में मतभेद भी हैं और शोध कार्य चल रहे हैं।

रासायनिक असंतुलन: मस्तिष्क के रसायनों में असंतुलन होने पर भी एडीएचडी के लक्षण उभरते हैं। मस्तिष्क में अटेंशन को नियंत्रित करने वाला हिस्सा एडीएचडी से पीड़ित बच्चों में कम सक्रिय होता है।

मस्तिष्क का चोटिल होना: कई बार चोट के कारण मस्तिष्क का अग्रभाग, जिसे फंटल लोब कहते हैं, क्षतिग्रस्त हो जाता है, जिससे आवेगों और भावनाओं को नियंत्रित करने में समस्या आती है।

समय पूर्व जन्म होना: समय पूर्व जन्म लेने वाले बच्चे या जन्म के समय बेहद कम वजनी बच्चों में भी इसकी आशंका अधिक होती है।

वयस्क भी हो सकते हैं शिकार

कुछ बच्चों में बड़े होने पर भी एडीएचडी की समस्या बनी रहती है। कई वयस्क ये जानते भी नहीं कि वे इससे प्रभावित हैं। एडीएचडी से पीड़ित वयस्कों में सुबह उठना, काम के लिये घर से निकलना, समय पर ऑफिस पहुंचना और अपने रोजमर्रा के कार्यों को बेहतर व समय पर पूरा करना एक चुनौतीभरा कार्य होता है। इन वयस्कों का स्कूल में फेल होने का इतिहास होता है। ये अकसर संबंध ढंग से नहीं निभा पाते। बेचैनी के शिकार रहते हैं। बचपन में सही उपचार नहीं मिलने के कारण कुछ लोगों में अपने व्यवहार के लिए नकारात्मक भावनाएं भी घर कर लेती हैं। यही वजह है कि सही समय पर एडीएचडी की पहचान होने पर व्यक्ति को समस्या से प्रभावी ढंग से निपटने में मदद मिलती है।

उपचार

इसका कोई स्थायी उपचार नहीं है। पीड़ित बच्चे को उसके व्यवहार पर काबू रखने का अभ्यास कराया जाता है, ताकि वह सामान्य जीवन जी सके। स्टीम्युलेंट मेडिकेशन के अलावा ये थेरेपी भी कारगर पायी गयी हैं-

साइकोथेरेपी (काउंसलिंग): इससे पीड़ित बच्चों को अपनी भावनाओं और हताशाओं को बेहतर ढंग से संभालना सिखाया जाता है। बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाने का प्रयास भी किया जाता है। परिवार के सदस्यों को भी काउंसलिंग दी जाती है।

बिहेवियरल थेरेपी: बच्चे के व्यवहार में सुधार लाया जाता है। पीड़ित बच्चे को स्कूल का होमवर्क या दूसरे प्रेक्टिकल कार्यों के लिए सहायता उपलब्ध करायी जाती है। बच्चे को स्वयं पर नियंत्रण करना सिखाया जाता है। गुस्से को काबू रखना या कार्य को सोच-समझकर करना सिखाया जाता है। अपनी बारी की प्रतीक्षा करना, दूसरों की सहायता करना व उनसे सहायता मांगना, दूसरों के तंग करने पर सही प्रतिक्रिया देना आदि सिखाते हैं।

डांस थेरेपी: दूसरे बच्चों के साथ घुलने-मिलने के अलावा डांस से बच्चों का शरीर पर नियंत्रण बढ़ता है।

प्ले थेरेपी: इसमें पीड़ित बच्चे को दूसरे बच्चों के साथ खेलने के लिए बढ़ावा दिया जाता है। काउंसलर माता-पिता को बच्चे को आउटडोर व इनडोर गेम्स खेलने देने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे बच्चों की सेहत व नींद प्रक्रिया में सुधार आता है।

माता-पिता की भूमिका

यह समझना जरूरी है कि एडीएचडी के कारण मस्तिष्क में रसायनों का असंतुलन हो जाता है, जिसके कारण बच्चा अपने आवेगों और व्यवहार पर काबू नहीं रख पाता। वह जानकर ऐसा नहीं कर रहा होता। माता-पिता के लिए बच्चे को प्रेम और सकारात्मक भावनाओं के साथ संभालना जरूरी है।
- बच्चे की दिनचर्या निर्धारित करें और उसका पालन करने के लिए प्रेरित करें।
- अच्छा काम करने पर प्रशंसा करें।
- टीवी व मोबाइल स्क्रीन के सामने अधिक देर न बैठने दें। आउटडोर खेल खेलने के लिये प्रेरित करें।
- बच्चों के खान-पान पर ध्यान दें। ऐसी चीजें, जिन्हें खाने पर वे हाइपरएक्टिव होते हैं, उन्हें न दें।
- बच्चे पर स्कूल में अच्छे प्रदर्शन के लिए दबाव न बनाएं। तनाव की अधिकता से यह समस्या बढ़ती है।
- स्कूल व प्रशासन से बच्चे के बारे में खुलकर बात करें। उनसे अनुरोध करें कि वे बच्चे को प्रथम पंक्ति में बिठाएं। खिड़की के पास न बिठाएं। सबके सामने न डांटकर अलग से समझाएं।

(हमारे विशेषज्ञ : डॉ. शंभवी सेठ, कंसल्टेंट, पीडियाट्रिक डेवलपमेंट, बीएलके सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, नई दिल्ली, डॉ. संदीप गोविल, मनोचिकित्सक, अटलांटा हॉस्पिटल)

एंडोमीट्रियोसिस
अब नहीं रहा अभिशाप

संतानहीनता के प्रमुख कारणों में एक कारण एंडोमीट्रियोसिस नामक रोग है, जिसका अब कारगर इलाज संभव है। एंडोमीट्रियोसिस गर्भाशय से जुड़ी एक समस्या है। यह समस्या महिलाओं की प्रजनन क्षमता को सर्वाधिक प्रभावित करती है। ऐसा इसलिए, क्योंकि गर्भधारण करने और बच्चे को जन्म देने में गर्भाशय की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्या है रोग का स्वरूप: गर्भाशय की अंदरूनी परत की कोशिकाओं के असामान्य विकास को एंडोमीट्रियोसिस नामक रोग कहा जाता है। यह समस्या तब होती है, जब कोशिकाएं गर्भाशय के बाहर विकसित हो जाती है, जिसे एंडोमीट्रियोसिस इंप्लांट कहते हैं। ये इम्प्लांट्स सामान्यतः अंडाशय, फैलोपियन ट्यूब्स, गर्भाशय की बाहरी सतह पर, आंत व पेल्विक गुहा की सतह पर पाए जाते हैं। ये बैजाइना, सरविक्स और यूरीनरी ब्लैडर पर भी पाये जा सकते हैं, लेकिन पेल्विस के दूसरे स्थानों की बजाय यहां सामान्यता कम पाए जाते है।

कारण : एंडोमीट्रियोसिस महिलाओं को उनके प्रजनन काल के दौरान प्रभावित करता है। एंडोमेट्रियोसिस के अधिकतर मामले 25-35 वर्ष की महिलाओं में देखे जाते हैं।

लक्षण : अधिकतर महिलाओं में एंडोमीट्रियोसिस के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते हैं, लेकिन जो लक्षण दिखाई देते हैं, उनमें मासिक चक्र (पीरियड्स) के समय अत्यधिक दर्द होता है। इस दर्द की तीव्रता हर महीने बदल सकती है और अलग-अलग महिलाओं में अलग-अलग हो सकती है।

पेल्विक पेन (पेट के निचले भाग में दर्द) : यह दर्द कई दिनों तक जारी रह सकता है। इससे कमर में दर्द और पेट में दर्द भी हो सकता है। यह पीरियड्स शुरू होने से पहले हो सकता है और कई दिनों तक चल सकता है।

इलाज : मासिक चक्र (पीरियड्स) के दौरान होने वाले रक्तस्राव और दर्द भरे शारीरिक संपर्क को गंभीरता से लें। स्थितियों के अधिक गंभीर होने से पहले स्त्री रोग विशेषज्ञ से मिलें। इस रोग के उपचार के लिए दवाएं और सर्जरी का उपयोग किया जाता है। हार्मोन थेरेपी भी इस रोग के उपचार के लिये की जाती है, क्योंकि मासिक धर्म के दौरान होने वाले हार्मोन परिवर्तन के कारण भी यह समस्या हो जाती है। हार्मोन थेरेपी एंडोमीट्रियोसिस की वृद्धि को धीमा करती है। एंडोमेट्रियोसिस के कारण होने वाली संतानहीनता की समस्या के लिये डॉक्टर सर्जिकल उपचार को सबसे बेहतर मानते हैं।

संतानहीनता से संबंध : जो महिलाएं एंडोमीट्रियोसिस से ग्रस्त हैं, उनमें से 35-50 प्रतिशत महिलाओं को गर्भधारण करने में समस्या होती है। इसके कारण फैलोपियन ट्यूब बंद हो जाती है। इस कारण अंडाणु और शुक्राणु का निषेचन नहीं हो पाता। कभी-कभी अंडाणु या शुक्राणु को भी नुकसान पहुंचता है। इससे भी गर्भधारण नहीं हो पाता। जिन महिलाओं में यह समस्या गंभीर नहीं होती उन्हें गर्भधारण करने में अधिक समस्या नहीं होती।

- डॉ. शीतल अग्रवाल, स्त्री रोग विशेषज्ञ, अपोलो नोवा हॉस्पिटल

जान लेवा घबराहट
एंग्जाइटी डिसऑर्डर

एंग्जाइटी डिसऑर्डर घबराहट की बीमारी है, जिसे ''पैनिक अटैक डिसऑर्डर' भी कहते हैं। आज देश में लगभग दो से चार प्रतिशत लोग इस बीमारी से ग्रस्त हैं। यह बीमारी आमतौर पर युवा लोगों, खासकर युवतियों को अधिक होती है। वैसे, यह बीमारी किसी भी आयु में हो सकती है, लेकिन पन्द्रह सें पैंतालीस साल की उम्र में अधिक होती है। जब यह बीमारी चालीस या उसके बाद की उम्र में होती है तब ई.सी.जी., एंजीयोग्राफी एवं ट्रेड मिल टेस्ट आदि परीक्षण सामान्य आने पर इसे ''कार्डियक न्यूरोसिस' या ''इस्कीमिया' मान लिया जाता है। लेकिन वास्तव में यह ''एंग्जाइटी डिसऑर्डर' है

एंग्जाइटी डिसऑर्डर का मुख्य लक्षण घबराहट है। इस बीमारी के तहत मांसपेशियों और पूरे शरीर में सख्ती आने लगती है। रक्त का संचरण, हृदय की धड़कन, रक्तचाप, सांसें और उपापचय-दर बढ़ जाती है तथा पसीना अधिक आने लगता है।

वैसे, घबराहट हर जीव के प्रतिरक्षा-तंत्र का अभिन्न हिस्सा है और यह उसके जीवित रहने के लिए अनिवार्य है। खतरे की आशंका से ही घबराहट होती है। जब हमें खतरे का अहसास होता है या खतरे का संकेत मिलता है तो हमारा शरीर उस खतरे का सामना करने के लिए तैयार होने लगता है। खतरे दो प्रकार के होते हैं- काल्पनिक एवं यथार्थ। जब खतरा वास्तव में उत्पन्न हो जाए एवं खतरे का आभास मिले तब घबराहट होना सामान्य प्रक्रिया है, इसे ''पैनिक अटैक' नहीं कहा जाएगा, बल्कि यह ''जनरलाइज्ड एंग्जाइटी डिसऑर्डर' है। लेकिन कई बार व्यक्ति को खतरे का अहसास यों ही होता रहता है, ऐसी स्थिति में स्नायु-पप्रणाली शरीर में वही परिवर्तन पैदा कर देती हैं, जो परिवर्तन वास्तविक खतरे के समय पैदा होते हैं और यही स्थिति ''एंग्जाइटी डिसऑर्डर' कहलाती है। जिस व्यक्ति को एंग्जाइटी का दौरा पड़ता है, उसे लगता है कि अभी जान निकल जाएगी। एंग्जाइटी डिसऑर्डर का मुख्य कारण तनाव एवं भय है। पारिवारिक संबंधों में कड़वाहट, घर-दफ्तर की समस्याएं, पढ़ाई-करियर संबंधी समस्याएं आदि तनाव के कारण हैं। ये समस्याएं हर व्यक्ति में तनाव पैदा करती हैं। लेकिन जब व्यक्ति बचपन या किशोरावस्था से ही तनावपूर्ण जीवन जी रहा होता है तो उसमें एंग्जाइटी जीवन-शैली का हिस्सा बन जाती है। व्यक्ति को जिस परिस्थिति में पैनिक अटैक होता है, अगर बाद में उसी परिस्थिति से वह गुजरे, तब उसे दोबारा पैनिक अटैक होगा। जैसे अगर गाड़ी चलाते समय पैनिक अटैक हो जाए तो उसे दोबारा गाड़ी चलाते समय यह अटैक होने का खतरा रहता है रोगी खुद भी ऐसी परिस्थिति में पड़ने से बचता है। यह फोबिया है, सबसे सामान्य फोबिया ''एगोराफोबिया' है। इसमें व्यक्ति को भीड़-भाड़ वाली या तंग जगह में घबराहट होती है। इससे ग्रस्त व्यक्ति को भीड़-भाड़ वाले बाजार, सड़क, बस-रेलगाड़ी या हवाई सफर में पहला अटैक होता है। इससे ग्रस्त व्यक्ति को अकेले में सफर नहीं करना चाहिए। दरअसल एंग्जाइटी डिसऑर्डर सामाजिक, मानसिक एवं शारीरिक कारणों से पैदा होती है। इसलिए इसके उपचार एवं बचाव के तरीके भी शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक होंगे। दवाइयां भी शारीरिक, मानसिक एवं सामजिक तौर पर असर करेंगी। पैनिक अटैक के इलाज के लिए अलप्रेजालोन, डुराजोपाम, डायजिपाम जैसी बेंजोडाइजापिन ग्रुप की दवाइयां दी जाती हैं। इस ग्रुप की दवाइयों की विशेषता यह है कि ये घबराहट कम करती हैं, मांसपेशियों को ढीला करती हैं और अच्छी नींद लाती हैं। एंग्जाइटी डिसऑर्डर के इलाज के लिए इन दवाइयों के अलावा बिहेवियर थेरेपी भी कारगर होती है। विहेवियर थेरेपी के तहत रोगी को रिलैक्सेशन की विशेष तकनीकें सिखाई जाती हैं। इसके लिए योग का भी सहारा लिया जाता है। इस तकनीकों की मदद से रोगी अपने मस्तिष्क को रिलैक्स करता है तथा अपनी सोच एवं व्यवहार में परिवर्तन लाता है, ताकि वह दवाइयों के बगैर भी पैनिक अटैक से मुक्त हो जाए।

वैसे, घबराहट हर जीव के प्रतिरक्षा-तंत्र का अभिन्न हिस्सा है और यह उसके जीवित रहने के लिए अनिवार्य है। खतरे की आशंका से ही घबराहट होती है। जब हमें खतरे का अहसास होता है। या खतरे का संकेत मिलता है तो हमारा शरीर उस खतरे का सामना करने के लिए तैयार होने लगता है।

- आभा

जोड़ों के दर्द से छुटकारे के लिए हफ्ते में 5 बार करें ये मड थेरेपी

अर्थराइटिस यानी गठिया आज की बदलती जीवनशैली, मोटापा, गलत खानपान आदि वजहों से ये रोग अब केवल बुजुर्गों तक ही सीमित नहीं रह गया है। बल्कि युवा भी इसका शिकार होते जा रहे है। अर्थराइटिस का सबसे अधिक प्रभाव घुटनों में और उसके बाद कुल्हे की हड्डियों में दिखाई देता है।

बहुत लोग समय-समय पर अपने बदन में दर्द और अकड़न महसूस करते हैं। कभी-कभी उनके हाथों, कंधों और घुटनों में भी सूजन और दर्द रहता है साथ ही उन्हें हाथ हिलाने में भी तकलीफ होती है। ऐसे लोगों को अर्थराइटिस हो सकता है। कुछ तरह के अर्थराइटिस में जोड़ों में बहुत ज्यादा दर्द होता है। अर्थराइटिस के लक्षण आमतौर पर समय के साथ दिखाई देते हैं, लेकिन अर्थराइटिस का दर्द अचानक भी हो सकता है।

अधिकतर लोग दर्द से छुटकारा पाने के लिए कई तरह की दवाईयों का भी सेवन करते हैं, लेकिन अर्थराइटिस का दर्द एक बार में नहीं जाता। दर्द में राहत मिलने के लिए कई महीने भी लग जाते हैं। अर्थराइटिस के दर्द के लिए कई देसी इलाज भी होते हैं लेकिन कई बार वो काम नहीं करते।

मड पैक थेरेपी

जर्नल यूमेटोलॉजी में मड पैक को एक नेचुरल प्रोडक्ट है जिसमें मिनरल का मिक्चर है। मड पैक ऑर्गेनिक और इन-ऑर्गेनिक से तैयार होता है जो कि बायोलॉजिकल और जियोलॉजिकल तरीके से बनता है। मड बाथ लेने से शरीर में काफी आराम मिलता है। नेचुरल रूप से मिट्टी में ये 5 तत्व मौजूद होते है। ये तत्व शरीर को शांति और शीतलता के साथ निरोगी बनाते है।

मिट्टी को आयुर्वेद में जीवन का अस्तित्व माना गया है। इसे प्राकृतिक चिकित्सा (मड थेरपी) कहा जाता है। प्राचीन समय से ही बीमारियों को दूर करने के लिए इस थेरेपी का प्रयोग किया जाता है।

मड पैक थेरेपी से दर्द में भी आराम मिलता है। लेकिन मड पैक के तापमान के हिसाब से प्रयोग किया जाता है। 42 डिग्री से 47 डिग्री तक पैक को 15 से 30 मिनट के लिए रखना होता है। शोधकर्ताओं ने पाया की मड पैक थेरेपी दर्द को कम करने में मददगार है।

थेरेपी के फायदे

यूमेटोलॉजी इंटरनेशनल के मुताबिक, अध्ययन में मड पैक थेरेपी से 45 लोगों को यूमेटाडटड के दर्द से फर्क पड़ा है। मड पैक थेरेपी को एक हफ्ते में 5 बार करना चाहिए और ये थेरेपी करीब 3 हफ्तों तक चलनी चाहिए।

इस थेरेपी से करीब शरीर में 30 फीसदी तक सूजन कम होती है, 20 फीसदी या उससे ज्यादा बीमारियां कम होती है और 20 फीसदी तक जोड़ों के दर्द में राहत मिलती है। इससे पता चलता है की मड पैक थेरेपी अर्थराइटिस के दर्द में मददगार होती है।

मड पैक के फायदे

अक्सर लोग सोचते हैं की मड पैक में सिर्फ मिट्टी और पानी का एक घोल होता है। लेकिन इसके अलावा मड पैक से कई तरह के फायदे भी होते हैं। मड पैक में भारी मात्रा में मिनरल होता है जो कि हमारे शरीर के लिए काफी फायदेमंद होता है। बता दें की मड बाथ के लिए 3 तरह के मड का प्रयोग किया जाता है। पहला जो गरम झरनों से बनी हुई कीचड़, दूसरा झील के नीचे बनी हुई कीचड़ और तीसरा जो समुद्र में पाई जाती है।

दर्द से मिलेगी राहत

जो लोग अर्थराइटिस के दर्द से पीड़ित है वो कोशिश करें की मड पैक थेरेपी का प्रयोग किया जाए। जिससे उन्हें इस थेरेपी के जरिए दर्द से छुटकारा मिल सके। ये थेरेपी आपके शरीर में सूजन को भी कम करने का काम करती है।

रेसिपी

रोस्टेड टोमैटो सूप

सामग्री

- 4 टमाटर
- 8 कली लहसुन की
- 2 टेबलस्पून ऑलिव ऑयल
- 1 टीस्पून काली मिर्च पाउडर
- 1/4 टीस्पून चीनी
- नमक स्वादानुसार

विधि

रोस्टेड टोमैटो सूप बनाने के लिए सबसे पहले माइक्रोवेव को 180 डिग्री सेंटीग्रेड पर 25-30 मिनट तक प्री-हीट कर लें। दूसरी ओर टमाटर को गोल-गोल पीस में काट लें साथ ही लहसुन भी काट लें। अब बेकिंग ट्रे पर टमाटर और लहसुन सेट कर दें। टमाटर पर ऑलिव ऑयल छिड़क कर 5-10 मिनट के लिए माइक्रोवेव में बेक कर लें। तय समय के बाद टमाटर को निकालकर हल्का ठंडा होने के लिए रख दें। टमाटर के ठंडा होने के बाद ग्राइंडर जार में टमाटर, लहसुन, काली मिर्च पाउडर, नमक और चीनी डालकर पेस्ट बना लें। सूप ज्यादा गाढ़ा हो तो आप पानी मिला सकते हैं। तैयार सूप को एक सूप बाउल में निकालकर सर्व करें।

रेसिपी

हरी प्याज का रायता

सामग्री

- 2 कप दही
- 2 टमाटर, बारीक काट लें
- 1 हरा प्याज, बारीक काट लें
- 1/2 कप उबले कॉर्न
- स्वादानुसार नमक
- स्वादानुसार काली मिर्च पाउडर
- स्वादानुसार जीरा पाउडर

विधि

हरी प्याज का रायता बनाने के लिए सबसे पहले दही को कपड़े में बांधकर 4-5 मिनट तक लटकाकर रखें। इसके बाद दही को एक बड़े कटोरे या बर्तन निकाल लें। इसमें प्याज, टमाटर, कॉर्न, स्वादानुसार नमक, स्वादानुसार काली मिर्च पाउडर डालकर अच्छी तरह मिक्स कर लें। आखिर में जीरा पाउडर छिड़क दें आप चाहें तो चाट मसाला भी डाल सकते हैं। हरी प्याज के रायता को ज्यादा देर तक नहीं रखना चाहिए। नहीं तो यह पानी छोड़ देगा। इसमें हरी प्याज के पत्ते यानी रिंग्स भी इस्तेमाल करने होते हैं इसलिए इन्हें फेके नहीं। हरी प्याज के रायते के साथ पराठा या फ्राइड राइस का स्वाद बढ़ जाता है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): दाम्पत्य जीवन में मधुरता बनी रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने में सफल होंगे। व्यापार में स्थिति ठीक रहेगी। माता पक्ष से विशेष लाभ। शुभांक-1-3-6

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): संतोष से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। शुभांक-4-6-8

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): मनोरथ सिद्ध होंगे, पूरे मनोयोग से काम में लगे रहे। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। शुभांक-2-5-7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): स्वास्थ्य में ताजगी बनने से नई ऊर्जा का संचार होगा। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शैक्षणिक क्षेत्र में उदासीनता रहेगी। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। शुभांक-5-7-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): सुनियोजित तरीके से कार्य आरम्भ करें, सफल होंगे। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों का समागम भी। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होंगी। रुका हुआ लाभ आज प्राप्त हो सकता है। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। शुभांक-1-2-5

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): अध्ययन-अध्यापन में समय गुजरेगा। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। शुभांक-3-5-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): महत्वपूर्ण निर्णय के लिए दूरदर्शिता से काम लें। रुकावटें आएंगी। कोष में कमी व व्यय की अधिकता से परेशान होंगे। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। जल्दबाजी में कोई भूल संभव है। कार्य भार बढ़ेगा। स्वविवेक से कार्य करें। वैचारिक उत्तेजना पर नियंत्रण रखें। शुभांक-5-6-8

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। खान-पान में सावधानी रखें। अच्छे समय का इन्तजार करें। कर्म प्रधान विचार धारा बनाये रखें। नैतिक दायरे में रहें। शुभांक-2-5-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): सामाजिक मान-सम्मान बढ़ेगा। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। रुपए पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। राजकीय कार्यों से लाभ। मनोबल ऊंचा रखें। शुभांक-5-6-7

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। अपने काम को प्राथमिकता से करें। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे है। कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। साक्षात्कार के लिए दिन शुभ रहेगा। शुभांक-5-7-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): कुछ पिछले संकट अब सिर उठा सकते हैं। निकट जनों के लिए अर्थव्यवस्था हेतु जोड़-तोड़ करना पड़ेगा। अपने संघर्ष में स्वयं को अकेला महसूस करेंगे। अभिष्ट कार्य सिद्ध होंगे। बुरी संगति से बचें। सुविधाओं में शनैः-शनैः बाधा आएगी। वरिष्ठ लोगों से कहासुनी वातावरण में तनाव पैदा करेंगे। शुभांक-5-7-8

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): पूर्व में किये कार्यों से लाभ मिलेगा। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। स्वास्थ्य पर ध्यान दें। शांतिपूर्वक कार्य करें। शुभांक-1-4-5

काकुरो पहेली - 5020

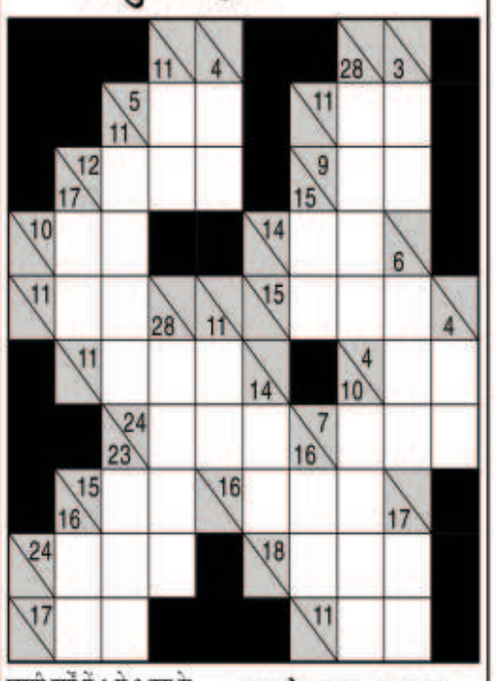

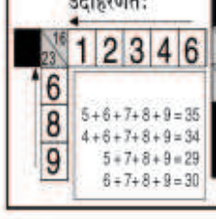

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए, किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

5+6+7+8+9=35
4+6+7+8+9=34
5+7+8+9=29
6+7+8+9=30

काकुरो - 5019 का हल

लॉफिंग जोन

अपने पति की हत्या के मामले में कटघरे में खड़ी महिला से न्यायाधिश ने कहा- आपको अपनी सफाई में क्या कहना है?

महिला : मैं क्या कह सकती हूँ, मेरे यहाँ सफाई तो नौकरानी करती है। इस विषय में इससे ज्यादा जानकारी तो वही दे सकती है।

□ □ □

रमन (प्रेमिका) से- गीता, प्लीज मुझसे शादी के लिए हाँ कर दो ना....! मैं तुम्हारी हर छोटी-छोटी इच्छाओं को पूरी करूँगा।

प्रेमिका बोली- ये सब तो ठीक है, परंतु मेरी उन बड़ी इच्छाओं का क्या होगा? उसे कौन पूरा करेगा दूसरा पति

□ □ □

एक बार तीन नीग्रो जंगल में जा रहे थे। घने जंगल के रास्ते में उन्हें भगवान मिले। भगवान ने उन्हें एक-एक वरदान माँगने के लिए कहा।

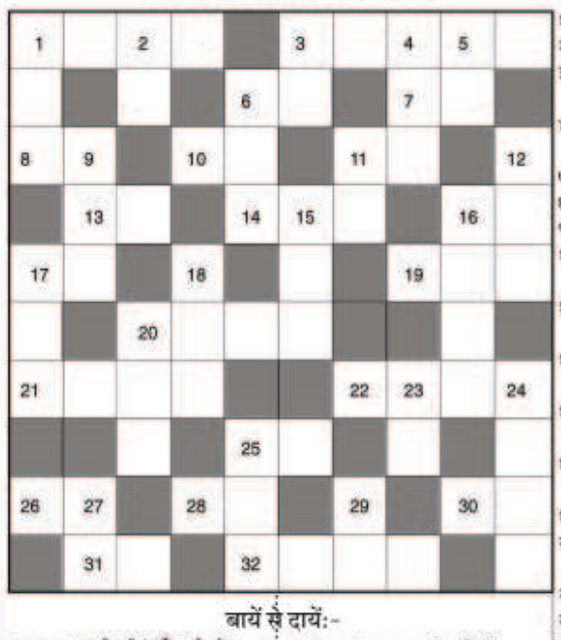

पहला बोला- मुझे गोरा बना दो।

भगवान- तथास्तु।

दूसरा बोला- मुझे भी गोरा बना दो।

भगवान ने कहा- तथास्तु।

अब तीसरे नीग्रो के माँगने की बारी थी। उसने वरदान माँगा- इन दोनो को फिर से काला-काला बना दो।

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली-5020

बायें से दायें:-

१. शाहरुख, जूही की 'चाँद तारे तोड़ लाऊँ' गीत वाली फिल्म-२,२
३. 'इस दीवाने लड़के' गीत वाली नसीर, आमिर, सोनाली की फिल्म-५
६. गोविंदा, नीलम की 'मैं तो हूँ सबका मेरा ना कोई' गीत वाली फिल्म-२
७. संजय कपूर, माधुरी की फिल्म-२
८. 'वाटर' के निर्देशिका कौन हैं-२
१०. अमिताभ, फरदीन खान, करीना कपूर की फिल्म-२
११. श्रेयस तलपदे, आयशा की 'ये हौसला कैसे झुके' गीत वाली फिल्म-२
१३. अनिल कपूर, श्रीदेवी की फिल्म-२
१४. प्रदीपकुमार, कल्पना की 'जिस दिल में बसा था प्यार' गीत वाली फिल्म-३
१६. 'मुझे तेरे जैसी लड़की' गीत वाली डिनो मारिया, बिपाशा की फिल्म-२
१७. अमिताभ, अजय, ऐश्वर्या की 'दिल डूबा नीली' गीत वाली फिल्म-२
१९. फिल्म 'कुछ कुछ होता है' में काजोल के किरदार का नाम था-३
२०. ऋषिकपूर, जयाप्रदा की फिल्म-४
२१. 'दुनिया ने सुन ली है चुपके से' गीत वाली धर्मेन्द्र, हेमा की फिल्म-४
२२. जीतेंद्र, नीतूसिंह की 'कोई रोको ना दीवाने को' गीत वाली फिल्म-४
२५. अमिताभ, जया भादुड़ी की फिल्म-२
२६. राजेश खन्ना, मुमताज की 'गोरे रंग पे ना इतना गुमान' गीत वाली फिल्म-२
२८. 'दिलवालों के दिल का' गीत वाली मनोज बाजपेयी, रवीना की फिल्म-२
३०. 'ऐ लो प्यार के दिन' गीत वाली सनी, सुनील, सेलिना की फिल्म-२
३१. संजय, कुमार गौरव, पूनम 'अमीरों की शाम गरीबों' गीतवाली फिल्म-२
३२. 'फिर से आये बदरा' गीत वाली संजीव, शर्मिला, वहीदा की फिल्म-४

ऊपर से नीचे:-

१. दिलीपकुमार, मीनाकुमारी की फिल्म-३
२. 'मैं शायर तो नहीं' गीत वाली फिल्म-२
३. 'तू मेरे पास भी' गीत वाली डी. चक्रवर्ती, मनोज बाजपेयी, उर्मिला की फिल्म-२
४. अमिताभ बच्चन, संजीव कुमार, शर्मिला टैगोर की फिल्म-३
५. अरविंद स्वामी, मधु की फिल्म-२
६. 'तेरी गलियों में ना' गीत वाली फिल्म-३
९. राजेंद्र कुमार, वहीदा रहमान की फिल्म-३
११. राजेश खन्ना, बबीता की 'दांतों तले दबा कर होंठ' गीत वाली फिल्म-२
१२. 'अंबर हमारा रस्ता' गीत वाली अरुण, रघुवरन, बेबी शामली, श्रुति की फिल्म-३
१५. कमल हासन, शाहरुख, रानी की 'चाहे पंडित हो' गीत वाली फिल्म-१,२
१६. 'मेरे संग संग आया' गीत वाली धर्मेन्द्र, राजेश खन्ना, विनोद, हेमा की फिल्म-४
१७. शाँवरअली, ब्रजेश हीरजी, जूही, शिल्पा की 'मेरा मन भँवरा' गीत वाली फिल्म-३
१८. प्रेमनाथ, बीना राय की फिल्म-३
२०. राजेश, फिरोजखान, शर्मिला की 'जीवन से भरी तेरी आँखें' गीत वाली फिल्म-३
२३. 'सुबह सुबह जब' गीत वाली फिल्म-२
२४. शशिकपूर, शर्मिला टैगोर की फिल्म-२,२
२५. 'सावन का महीना पवन करे' गीत वाली फिल्म-३
२७. 'मुझ से दोस्ती करोगे' में करीना कपूर के किरदार का नाम क्या था-२
२९. 'तेरी याद बिछा के सोता हूँ' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली-5019

सूडोकु -5020

5	9		1		2		3	8
			4		5			
2								5
		3		5		4	8	
	7						1	
	5	8		6		9		
8								1
			2		9			
3	4		6		7		5	2

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -5019 हल

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2

शब्द पहेली -5020

बाएँ से दाएँ

1.हलचल,कोलाहल-3,3
5.मानवीयता-4
8.शरीर, बदन-2
9.ऊंचाई-3
10.तीर, बाण-2
11.मनमोहक-4
12.रग, नाड़ी-2
14.दुत्कारना-4
16.चतुर, फुर्तीला-3
18.साझेदार-4
20.रमण लायक-3,2
23.भारी, वजन वाला-5
26.असावधानी-4
27.दाल पीसना-3
29.निश्चित-4
30.कविता-2
32.शरीर व इच्छा-2,2
33.भारत के झंडे का एक एक रंग-2
35.सलाम करना-3
36.रास्ता-2
37.राह पर चलनेवाले-4
38.जहाज चलाने की प्रक्रिया-3,3

ऊपर से नीचे

1.पैतृक संपत्ति का वारिस-6
2.गाय के स्तन-2
3.प्रसन्न होने का भाव-4
4.लगन, जिज्ञासा-3
5.खदान,खान (अंग्रेजी में-3)
6.अधीन, काबू-2
7.डामर, टार-4
11.पूर्वरक्षण, रिजर्वेशन-4
13.सच्चाई-2
15.दुश्मनी,शत्रुता-4
17.घूंघट, बुरखा-3
18.भाग्य का लेखा-जोखा-4
19.धूल, रेत-2
21.भवन, प्रसाद-3
22.जोड़, कुल-2
24.लावण्ययुक्त-4
25.जीवन निर्वाह का ढंग,-3,3
27.विजयादशमी-4
28.मोड़, छोर-2
29.मृत्यु का देवता, यम-4
31.बुरी आदत-3
32.सभ्य व्यवहार-3
34.मार्ग-2
36.गोंद, वार्निश-2

शब्द पहेली -5019 का हल

अनीता हसनंदानी

बनीं विनर, कृष्णा श्रॉफ के साथ इन 4 छोरियों से था आखिरी मुकाबला

अपनी पूरी जिंदगी शहर में बिताने वाली लड़कियों के लिए इस चकाचौंध से दूर, गांव की मिट्टी और देसीपन को अपनाना आसान नहीं होता. लेकिन जी टीवी के रियलिटी शो छोरियां चली गांव में यही कमाल देखने मिला. शो की 11 कंटेस्टेंट्स ने शहर की सारी सुख-सुविधाएं छोड़कर गांव की जिंदगी को गले लगाया. हफ्तों तक चली कड़ी चुनौतियों और जज्बातों के इस सफर के बाद, शो को आखिरकार अपनी पहली विजेता मिल गई है. ये कोई और नहीं बल्कि सबकी चहेती टीवी एक्ट्रेस अनीता हसनंदानी हैं, जिन्होंने फाइनल में जैकी श्रॉफ की बेटी कृष्णा श्रॉफ और बाकी फाइनलिस्ट को हराकर ये खिताब अपने नाम किया.

डेढ़ महीने में खत्म हुआ शो

'छोरियां चली गांव' का पहला सीजन 3 अगस्त, 2025 को शुरू हुआ था और अब अक्टूबर के पहले हफ्ते में इसका फिनाले होने जा रहा है. इस शो ने अपने हटके फॉर्मेट से हर किसी को चौंका दिया था. शो का मकसद ये देखना था कि शहरी लड़कियां कैसे गांव के माहौल में ढलती हैं, और उनकी जिंदगी में क्या बदलाव आते हैं.

शहर की छोरी, गांव की जिंदगी

'छोरियां चली गांव' को रोडीज फेम रणविजय सिंघा ने होस्ट किया था, उन्होंने हर कदम पर इन कंटेस्टेंट्स को गाइड किया. गांव में रहने के लिए लड़कियों को गाय का दूध निकालना, कुएं से पानी लाना, बैलगाड़ी की सवारी करना और चूल्हे पर खाना बनाना जैसे कई काम सीखने पड़े. उनकी परफॉर्मेंस को हर हफ्ते जज किया जाता था कि वे कितनी मेहनत करती हैं, गांव वालों से उनका रिश्ता कैसा है और मुश्किलों में वे कैसे खुद को संभालती हैं. जो छोरी सबसे अच्छा परफॉर्म करती थी, उसे छोरी नंबर 1 का खिताब मिलता, जबकि सबसे कमजोर को बाहर का रास्ता देखना पड़ता था.

कई बड़े चेहरे थे शो में शामिल

इस शो में अनीता हसनंदानी, कृष्णा श्रॉफ, ऐश्वर्या खरे, सुमुखी सुरेश, अंजुम फाकीह, रमीत संधू, एरिका पैकर्ड, और समृद्धि मेहरा (चिक्की-मिक्की में से एक) जैसे कई बड़े नाम शामिल थे. इन सब में से, कृष्णा श्रॉफ, एरिका पैकर्ड, सुरभि मेहरा और डॉली जावेद फाइनल तक पहुंचीं. लेकिन इन सब को पीछे धोकर अनीता ने शो की ट्रॉफी अपने नाम कर दी.

अनीता की जीत का सफर

अनीता हसनंदानी ने शो में अपनी सादगी और लगन से सबका दिल जीत लिया. उन्होंने न सिर्फ टास्क में ताकत दिखाई, बल्कि दबाव में भी खुद को शांत रखा. उनकी सबसे बड़ी जीत ये रही कि उन्होंने गांव वालों का भी दिल जीता, और उनकी अपनी एक अलग पहचान बनाई. अनीता के मुताबिक उनकी इस जीत को और भी खास बनाता है उनका त्याग. अनीता पहली बार इतने दिनों के लिए अपने छोटे बेटे से दूर रहीं. उन्होंने शो पर कई बार बताया कि बेटे को घर छोड़कर आना कितना मुश्किल था, लेकिन उन्होंने इसे अपनी हिम्मत की परीक्षा के तौर पर लिया.

पूनम पांडे नहीं बनेंगी मंदोदरी... लव कुश रामलीला समिति के फैसले का VHP ने किया स्वागत

बॉलीवुड एक्ट्रेस और इंटरनेट सेंसेशन पूनम पांडे अपनी अलग-अलग बातों को लेकर सुर्खियों में रहती हैं. इन दिनों वो दिल्ली के लाल किले की मशहूर राम लीला में लंकापति रावण की पत्नी मंदोदरी का किरदार निभाने के लिए चर्चा में थी. राम लीला कमिटी के इस फैसले के बाद पूरे देश में इस बात को लेकर काफी विवाद हुआ था.

विश्व हिंदू परिषद ने कमिटी के फैसले का विरोध किया था, जिसके बाद इस बात को लेकर संशय बना हुआ था कि पूनम इस राम लीला का हिस्सा होंगी या नहीं.पुरानी दिल्ली की मशहूर लव कुश रामलीला में पूनम पांडे के मंदोदरी का अभिनय निभाने को लेकर शुरू हुआ विवाद अब थमता नजर आ रहा है. समिति के फैसले का विरोध करने वाले विश्व हिंदू परिषद ने दावा किया कि लव कुश रामलीला समिति ने रामलीला के मंचन से पूनम पांडे को अलग कर दिया है.

विश्व हिन्दू परिषद ने क्या कहा ?

विश्व हिन्दू परिषद, इंद्रप्रस्थ (दिल्ली) प्रांत के मुताबिक लव कुश रामलीला समिति के लिए गए उस फैसले का दिल से स्वागत करता है, जिसमें उन्होंने समाज और पूजनीय संतजनों की भावनाओं का सम्मान करते हुए इस साल रामलीला मंचन में एक्ट्रेस पूनम पांडे को आमंत्रित न करने का निर्णय लिया है. वीएचपी ने अपनी बात में आगे कहा, 'समिति का ये निर्णय समाज की सांस्कृतिक मर्यादा और धार्मिक परंपराओं की रक्षा की दिशा में एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है.

अश्लीलता सदैव मर्यादा का उल्लंघन करती है

वीएचपी ने आगे कहा धर्म सदा मर्यादा का संरक्षण करता आया है, और ये सर्वमान्य सत्य है कि अश्लीलता सदैव मर्यादा का उल्लंघन करती है. इसलिए मर्यादा के मंच पर अश्लीलता को स्थान देना उचित नहीं हो सकता.

विहिप प्रान्त मंत्री सुरेंद्र गुप्ता ने कहा कि हम विश्वास करते हैं कि इस साल की लव कुश रामलीला और भी ज्यादा सफल, भव्य और जनमानस को प्रेरित करने वाली होगी. प्रान्त मंत्री ने कहा कि विश्व हिन्दू परिषद, इंद्रप्रस्थ प्रांत रामलीला समिति को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता है.

इन 2 मामलों में अक्षय-सलमान से आगे हैं अमिताभ बच्चन, जानकर बिल्कुल नहीं होगा यकीन

'सदी के महानायक' अमिताभ बच्चन बॉलीवुड में एक अलग और अमिट पहचान रखते हैं. 56 सालों से अमिताभ अपने करोड़ों फैंस का मनोरंजन कर रहे हैं. बॉलीवुड के सबसे फेमस और सबसे सम्मानित कलाकार माने जाने वाले बिग बी बॉलीवुड के टॉप रईस एक्टर्स में भी शामिल हैं. वहीं वो 1 हजार करोड़ी फिल्म देने के मामले में बॉलीवुड के दो बड़े सुपरस्टर अक्षय कुमार और सलमान खान से भी आगे हैं. जबकि रईसी में भी ये दोनों स्टार्स बिग बी से काफी पीछे हैं.अमिताभ बच्चन ने अपने 56 साल के करियर में एक से बढ़कर एक फिल्में दी हैं. उनके करियर में ऐसी फिल्म भी शामिल है जो 1 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई कर चुकी हैं. जबकि 34 साल से बॉलीवुड में काम कर रहे अक्षय कुमार और 37 साल से इंडस्ट्री में एक्टिव सलमान खान ये कारनामा नहीं कर पाए हैं.

अमिताभ बच्चन की 1 हजार करोड़ी फिल्म

अमिताभ बच्चन 82 साल की उम्र में भी लगातार फिल्में कर रहे हैं. जबकि इन दिनों वो अपने फैंस का मनोरंजन छोटे पर्दे पर अपने क्विज शो 'कौन बनेगा करोड़पति' के 17वें सीजन से कर रहे हैं. अमिताभ बच्चन की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म है 'कल्कि 2898 एडी'.

इसने दुनियाभर में 1042 करोड़ रुपये की कमाई की थी.2024 में आई इस फिल्म में बिग बी ने अश्वत्थामा का रोल निभाया था. इसमें प्रभास और दीपिका पादुकोण लीड रोल में थे. वहीं सलमान की सबसे ज्यादा कमाने वाली फिल्म (वर्ल्डवाइड- 922 करोड़ रुपये) बजरंगी भाईजान है. वहीं अक्षय के करियर की सबसे ज्यादा कमाने वाली फिल्म का नाम है 2.0 है. इसने दुनियाभर में 745 करोड़ रुपये की कमाई की थी.

नेटवर्थ में भी आगे हैं बिग बी

अमिताभ बच्चन, अक्षय और सलमान से 1 हजार करोड़ी फिल्म देने के अलावा नेटवर्थ के मामले में भी आगे हैं. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक अक्षय कुमार की टोटल नेटवर्थ 2700 करोड़ रुपये है. सलमान खान की बात करें तो सलमान के पास करीब 2900 करोड़ रुपये की नेटवर्थ है. वहीं अमिताभ बच्चन की नेटवर्थ लगभग 3400 करोड़ रुपये है. बिग बी महीने के 5 करोड़ रुपये तक और सालाना 60 करोड़ रुपये तक कमाते हैं. फिल्मों और टीवी शो के अलावा वो ब्रांड एंडोर्समेंट और इन्वेस्टमेंट से भी तगड़ी कमाई करते हैं.

तान्या मित्तल

बनी बिग बॉस की महारानी! सेवा में जुटे घरवाले, एक-एक खोके की सभी को उम्मीद

बिग बॉस के हर सीजन में कई ऐसे कंटेस्टेंट्स आते हैं, जो लड़ाई-झगड़ों से अपनी पहचान बनाते हैं. कुछ जानकर झगड़े करते हैं तो कुछ सोच समझकर अलग-अलग चाल चलते हैं. हालांकि मकसद सभी का एक ही होता है शो में बने रहना और ट्रॉफी और प्राइज मनी जीतकर घर वापस जाना. लेकिन बिग बॉस 19 में शामिल हुईं तान्या मित्तल इन सबसे थोड़ी अलग हैं. तान्या ने बेवजह के झगड़ों से नहीं बल्कि अपनी अमीरी के किस्से सुना-सुनाकर दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींचा है. इसी बीच अब तान्या बिग बॉस के घर की महारानी बन गई हैं.दरअसल बिग बॉस 19 के मेकर्स ने शो का नया प्रोमो शेयर किया है. नए प्रोमो में घर के कुछ सदस्य तान्या की सेवा में जुटे हुए नजर आ रहे हैं. कोई उन्हें अपने हाथों से खाना खिला रहा है, तो कोई उन्हें पानी पिला रहा है. इतना ही नहीं शहबाज तो तान्या मित्तल की हवा करते हुए और उनके आगे-पीछे घुमते हुए नजर आ रहे हैं. चलिए जानते हैं कि क्या है पूरा मामला.

तान्या मित्तल की सेवा में जुटे घरवाले

प्रोमो की शुरुआत शहबाज और तान्या के साथ होती है. जहां शहबाज जोर से कहते हुए नजर आते हैं कि महारानी के लिए परात में खाना आ रहा है. वहीं तान्या बिल्कुल महारानी की तरह सजी हुई नजर आती हैं. हालांकि वह हमेशा ही इसी तरह से सज-संवरकर रहती हैं. इसी बीच गौरव खन्ना कहते हैं कि तान्या का अपना ही अलग शो चल रहा है. दूसरी तरफ तान्या नजाकत के साथ शहबाज को धन्यवाद कहती हैं.

वहीं तान्या एक-एक करके लोगों को काम देना शुरू करती हैं. तान्या कहती हैं कि शहबाज प्लेट उठाकर लाया है, अब अमाल खाना खिलाएगा और जीशान जी पानी पिलाएंगे. ये बात सुनते ही गौरव जोर-जोर से तालियां बजाने लगते हैं. वहीं तान्या की फरमाइश पर अमाल गार्डन में आते हैं और अपने हाथों से उन्हें खाना खिलाते हैं. खाना खाने के दौरान तान्या अमाल से कहती हैं कि इतना बड़ा-बड़ा बाइट खिला रहे हो हाथी हूं क्या मैं ?

अमाल ने लगाई तान्या से एक खोके की उम्मीद

इसी बीच अमाल कहते हैं कि देखो सेवा करेंगे तो क्या पता सभी के अकाउंट में एक-एक खोका आ जाए, ये बात सुनते ही सभी घरवाले खूब हंसते हैं. वहीं शहबाज गाना गाते हैं कि महारानी बहुत दानी है. महाराजा ने रोटी खिलानी है. फिर जैसे ही तान्या पानी पीने लगती हैं, तो गौरव कहते हैं कि पानी जीशान पिलाएगा. तभी जीशान आते हैं और पानी पिलाते हैं. दूसरी ओर शहबाज उन्हें तान्या का पिता बताने लगते हैं.

दिनभर के लिए विधानसभा से निलंबित किए गए अखिल गोगोई

गुवाहाटी, २४ जुलाई (हि.स.)। असम विधानसभा में कार्यवाही के दौरान निर्दलीय (राइजर दल) विधायक अखिल गोगोई को आज दिनभर के लिए सदन से निलंबित कर दिया गया।

अखिल गोगोई ने राज्य में आई बाढ. से सबसे बुरी तरह प्रभावित ऊपरी असम के शिवसागर जिला समेत अन्य जिलों के संबंध में सभा स्थगन का प्रस्ताव पेश करने के लिए विधानसभा अध्यक्ष रंजीत दास से २ मिनट का समय मांगा था। अध्यक्ष ने उन्हें २ मिनट बोलने का समय दिया। समय बीत जाने के बाद भी काफी देर तक अखिल गोगोई से बार-बार अध्यक्ष के आग्रह करने के बावजूद नहीं बैठे।गोगोई ने सदन में स्थगन प्रस्ताव पेश किया। उनका प्रस्ताव स्वीकार नहीं किए जाने पर वह हंगामा करने लगे। गोगोई बेहद गुस्से में अध्यक्ष पर विश्वासघात करने का आरोप लगाया। इतना नहीं टेबल पर चढक़र नारेबाजी करते हुए अध्यक्ष पर समय न देने का आरोप लगाया।अध्यक्ष दास ने कहा कि आपके (गोगोई) द्वारा मांगी गयी समय सीमा के तहत २.४० मिनट तक बोल चुके हैं। ऐसे में पूर्व निर्धारित कार्यवाही को अब आगे बढाया जाएगा। गोगोई के टेबल पर चढक़र हंगामा करने वाले आचरण से पूरा सदन आवाक रह गया। अध्यक्ष द्वारा बार-बार शांत होने की अपील जब काम नहीं आई तो अध्यक्ष के आदेश पर मार्शल के जरिए अखिल को पूरे दिनभर के लिए सदन की कार्यवाही से निलंबितर कर दिया गया।सदन से बाहर आने के बाद अखिल गोगोई ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कार्रवाई की कडी आलोचना की।--

राहुल गांधी नीट पेपर लीक मुद्दे का राजनीतिकरण कर रहे हैं : डॉ. रणोज पेगू

गुवाहाटी, २४ जुलाई (हि.स.)। असम के शिक्षा मंत्री डॉ. रणोज पेगू ने गुरुवार को आरोप लगाया कि लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी नीट पेपर लीक मामले को राजनीतिक लाभ के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं और छात्रों की चिंताओं को कांग्रेस की राजनीति का माध्यम बना रहे हैं। असम प्रदेश भाजपा मुख्यालय में आज संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए डॉ. पेगू ने कहा कि नीट पेपर लीक बेहद दुर्भाग्यपूर्ण और संवेदनशील मामला है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने इस प्रकरण में त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपितों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजा है। उन्होंने दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दोषियों को शीघ्र और कडी सजा दिलाने के लिए फास्ट ट्रैक अदालतों की स्थापना की घोषणा की है, जो छात्रों के हितों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।डॉ. पेगू ने आरोप लगाया कि भाजपा और एनडीए इस मुद्दे पर संसद में व्यापक चर्चा के लिए तैयार हैं, लेकिन राहुल गांधी और कांग्रेस रचनात्मक बहस से बचते हुए संसद की कार्यवाही बाधित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि परीक्षा प्रश्नपत्र लीक की समस्या का समाधान राजनीतिकरण से नहीं, बल्कि संस्थागत सुधारों और सभी पक्षों के सहयोग से संभव है।उन्होंने राहुल गांधी से यह भी सवाल किया कि कांग्रेस और इंडी गठबंधन शासित राज्यों्जम्मू-कश्मीर, झारखंड, तमिलनाडु, पंजाब, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, केरल, तेलंगाना और हिमाचल प्रदेश्में कथित पेपर लीक की घटनाओं पर वे मौन क्यों रहे। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के कार्यकाल में राजस्थान में कई चर्चित पेपर लीक मामले सामने आए थे।डॉ. पेगू ने प्रधानमंत्री के आधिकारिक आवास के बाहर राहुल गांधी के हालिया प्रदर्शन की भी आलोचना करते हुए इसे अनुचित बताया। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस और वामपंथी दल छात्रों को राजनीतिक लाभ के लिए ढाल बना रहे हैं।शिक्षा मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शिक्षा बजट में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा आईआईटी, आईआईएम, विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों की संख्या के साथ-साथ विभिन्न पाठ्यक्रमों में सीटों का भी विस्तार किया गया है, जो छात्रों के हित में महत्वपूर्ण कदम हैं।संवाददाता सम्मेलन में भाजपा असम प्रदेश के महासचिव दिप्लू रंजन शर्मा और अनुप बर्मन, मुख्य प्रवक्ता किशोर उपाध्याय तथा प्रदेश मीडिया विभाग के संयोजक रूपम गोस्वामी भी उपस्थित रहे।

छात्रों को अन्ना हजारे का समर्थन मिला, आंदोलन में शामिल होंगे, गांधी स्मारक पर करेंगे मौन आंदोलन

नई दिल्ली.(एजें) २४ जुलाई : नीट परीक्षा में कथित गडब़डि?ों और प्रश्नपत्र लीक को लेकर जारी छात्र आंदोलन को अब वरिष्ठ समाजसेवी अन्ना हजारे का समर्थन मिल गया है. अन्ना हजारे ने आंदोलनरत छात्रों के पक्ष में खुलकर आवाज उठाई है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर प्रदर्शन के दौरान हुई पुलिस कार्रवाई को बेहद दुखद बताया है. उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में टकराव के बजाय संवाद ही सबसे बेहतर रास्ता है.अन्ना हजारे के करीबी सहयोगियों के अनुसार, वह गुरुवार को महाराष्ट्र के अहिल्यानगर पहुंचकर छात्रों के चल रहे आंदोलन में शामिल होंगे और उनकी समस्याओं पर चर्चा करेंगे. वह दोपहर में अहिल्यानगर के वाडिया पार्क स्थित गांधी स्मारक में मौन आंदोलन करेंगे.बुधवार को पीएम मोदी को भेजे गए पत्र में अन्ना हजारे ने दिल्ली में छात्रों के प्रदर्शन के दौरान हुई हिंसा और पुलिस कार्रवाई पर चिंता व्यक्त की. उन्होंने लिखा कि किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में संवाद हमेशा टकराव से बेहतर होता है और हर हाल में हिंसा, सरकारी संपत्ति को नुकसान तथा अत्यधिक बल प्रयोग से बचना चाहिए. उन्होंने प्रधानमंत्री से अपील की कि छात्रों की आवाज को केवल कानून-व्यवस्था का मामला न माना जाए, बल्कि उसे युवाओं की वास्तविक चिंताओं की अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाए.अपने पत्र में अन्ना हजारे ने कहा कि यदि किसी मामले में जवाबदेही तय करते हुए किसी मंत्री का इस्तीफा लिया जाता है, तो इससे सरकार कमजोर नहीं होती. बल्कि ऐसा कदम अन्य मंत्रियों के लिए भी स्पष्ट संदेश होगा कि यदि वे अपने विभाग की जिम्मेदारियों का सही तरीके से निर्वहन नहीं करेंगे, तो उन्हें भी जवाबदेह ठहराया जा सकता है. इससे शासन व्यवस्था अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनेगी.

गांधीवादी विचारक अन्ना हजारे ने पत्र में कहा कि देश के लाखों युवा परीक्षा के पेपर लीक, भर्ती प्रक्रियाओं में देरी और बढती बेरोजगारी से परेशान हैं. इन मुद्दों को केवल प्रशासनिक या कानून-व्यवस्था की समस्या मानना उचित नहीं होगा, क्योंकि यह युवाओं के व्यापक असंतोष का संकेत है. जब कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) नीट परीक्षा में कथित गडब़डि?ों को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रही हैं. पिछले महीने से ही सीजेपी का आंदोलन जंतर-मंतर पर चल रहा है.

विद्यालय शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के बजट कटौती प्रस्ताव को विपक्ष ने चर्चा के बाद वापस लिया

गुवाहाटी, २४जुलाई (हि.स.)। १६वीं असम विधानसभा बजट सत्र के दौरान आज १०वें दिन विपक्ष की ओर से विद्यालय शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के बजट कटौती प्रस्ताव पर दो दिनों तक चली चर्चा के बाद विपक्ष ने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया। जिसके बाद शिक्षा विभाग के बजट को पारित किये जाने का रास्ता साफ हो गया।विधानसभा अध्यक्ष रंजीत कुमार दास ने कटौती प्रस्ताव पर चर्चा के अंत में कहा कि दो दिनों में ५० विधायकों ने लंबी चर्चा की। जिससे शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषय की महत्ता और बढ.गयी है। विपक्षी विधायकों ने यह साफ किया कि कटौती प्रस्ताव लाने का उनका मुख्य उद्देश्य इस विषय की गंभीरता को उजागर करना था, सरकार इस क्षेत्र में और धन का आवंटन करे, उसका वे समर्थन करेंगे।चर्चा के अंत में राज्य के शिक्षा मंत्री डॉ. रनोज पेगू ने इस मुद्दे पर हुई सार्थक एवं लंबी चर्चा का स्वागत करते हुए विधायकों द्वारा उठाए गये सभी मुद्दों का जवाब देते हुए सरकार और शिक्षा विभाग की ओर से सभी मुद्दे के समाधान का आश्वासन दिया।शिक्षा मंत्री के आश्वासन के बाद कांग्रेस के वरिष्ठ विधायक एवं नेता प्रतिपक्ष वाजेद अली चौधरी, एआईयूडीएफ के विधायक मुजिबुर रहमान, टीएमसी के विधायक शेरमान अली अहमद ने कटौती प्रस्ताव को वापस ले लिया। उल्लेखनीय है कि विद्यालय शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के बजट कटौती प्रस्ताव प्रस्ताव पर २२ जुलाई से आरंभ हुई चर्चा के दूसरे दिन आज कांग्रेस के नुरुल हुदा, डॉ. जय प्रकाश दास, जाकिर हुसैन सिकदर, महिबुर रहमान, नुरुल इस्लाम, वाजेद अली चौधरी, अब्दुर रहीम अहमद, एआईयूडीएफ मुजिबुर रहमान, टीएमसी के शेरमान अली अहमद ने कटौती प्रस्ताव के समर्थन में चर्चा किया। जबकि, भाजपा के प्रकाश चंद्र दास, तुलीराम रांग्हांग, पुलक गोहाई, निसो तेरंग्पी, ऋतुबरन शर्मा, भुवन गाम, पवित्र राभा, विक्टर कुमार दास, शशिकांत दास, किशोर नाथ, हिमांशु शेखर वैश्य एवं अगप के जीवेश राय कटौती प्रस्ताव के विरोध में चर्चा में हिस्सा लिया।

जिरीघाट में १.२० करोड. रुपये की हेरोइन बरामद, असम राइफल्स ने तस्करी की कोशिश नाकाम की

प्रे.सं. शिलचर, २४ जुलाई। कछार जिले के जिरीघाट इलाके में असम राइफल्स और कछार पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में करीब १.२० करोड.रुपये मूल्य की हेरोइन बरामद कर एक कथित तस्कर को गिरफ्तार किया गया। सुरक्षा बलों की त्वरित कार्रवाई से मादक पदार्थों की तस्करी की एक बडी कोशिश विफल हो गई।जानकारी के अनुसार, असम राइफल्स के जवानों को मादक पदार्थों की तस्करी के संबंध में सूचना मिली थी। इसके बाद कछार पुलिस के साथ समन्वय कर संयुक्त टीम ने कार्रवाई करते हुए एक संदिग्ध व्यक्ति को पकड. लिया। तलाशी के दौरान उसके पास से २० साबुनदानी में छिपाकर रखी गई लगभग २३४ ग्राम हेरोइन बरामद हुई, जिसकी अनुमानित कीमत १.२० करोड. रुपये बताई गई है।कार्रवाई के दौरान एक पल्सर मोटरसाइकिल और एक मोबाइल फोन भी जब्त किया गया। प्रारंभिक जांच में इनका इस्तेमाल मादक पदार्थों की आवाजाही में किए जाने की आशंका है।गिरफ्तार व्यक्ति और बरामद ादक पदार्थों को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए पुलिस को सौंप दिया गया है। असम राइफल्स ने कहा कि मादक पदार्थों के नेटवर्क के खिलाफ अभियान आगे भी जारी रहेगा। इस कार्रवाई को असम राइफल्स और नागरिक पुलिस के बीच प्रभावी समन्वय का एक और उदाहरण माना जा रहा है।

भारतीय मजदूर संघ ने मनाया ७१वां स्थापना दिवस

प्रे.सं. प्रयागराज, २३ जुलाई। भारतीय मजदूर संघ की प्रयागराज जिला इकाई की ओर से गुरुवार को जॉर्जटाउन स्थित संघ कार्यालय में ७१वां स्थापना दिवस उत्साह और गरिमामय वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष महेश नारायण त्रिपाठी ने की, जबकि संचालन जिला मंत्री रविकान्त ने किया। मुख्य अतिथि विभाग प्रमुख राधेश्याम पाण्डेय रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन और भारतीय मजदूर संघ के गीत के साथ हुआ। मुख्य अतिथि राधेश्याम पाण्डेय ने कहा कि भारतीय मजदूर संघ की स्थापना परम पूज्य दत्तोपंत ठेंगडी ने राष्ट्रहित, उद्योग हित और मजदूर हित के उद्देश्य से की थी। उन्होंने कहा कि स्थापना के समय संगठन छोटा था, लेकिन आज लगभग तीन करोड.सदस्यों के साथ भारतीय मजदूर संघ देश का सबसे बडा श्रमिक संगठन बन चुका है।

उन्होंने कहा कि संगठन व्यक्तियों से नहीं, बल्कि विचारों और कार्यकर्ताओं की निष्ठा से चलता है। भारतीय मजदूर संघ श्रमिक हितों के संरक्षण के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहेगा।कार्यक्रम में सह विभाग प्रमुख सुरेश चन्द्र फलोरिया, संरक्षक के.पी. दुबे, जिला अध्यक्ष महेश नारायण त्रिपाठी, जिला मंत्री रविकान्त, जिला उपाध्यक्ष जगदम्बा प्रसाद विश्वकर्मा, रघुनन्दन सिंह, मीडिया प्रभारी राम रतन सिंह सहित विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

धुबरी में ग्राम पंचायत के वार्ड सदस्य एवं मतिरचर ग्राम पंचायत के अध्यक्ष अब्दुर रहमान पद से हटाए गए

प्रे.सं. धुबरी, २३ जुलाई: असम पंचायत अधिनियम, १९९४ का उल्लंघन कर तथा निर्वाचन अधिकारी के समक्ष गलत जानकारी प्रस्तुत कर चुनाव लडऩे के आरोप में धुबरी जिले की ७३ नंबर मतिरचर ग्राम पंचायत के वार्ड संख्या-५ के निर्वाचित सदस्य एवं ग्राम पंचायत अध्यक्ष अब्दुर रहमान को पद से हटा दिया गया है।नियमों के अनुसार तीन जीवित संतान वाले व्यक्ति पंचायत चुनाव नहीं लड.सकते। आरोप है कि अब्दुर रहमान ने अपनी पहली पत्नी के केवल दो बच्चों की जानकारी देकर नामांकन दाखिल किया, जबकि दूसरी पत्नी और उससे जन्मे एक बच्चे की जानकारी छिपा ली। ग्राम पंचायत के कुछ सदस्यों ने जिला आयुक्त को शिकायत दी थी कि अब्दुर रहमान की दो पत्नियां और तीन जीवित संतान हैं। लंबे समय तक चली जांच के बाद जिला आयुक्त ने उन्हें तत्काल प्रभाव से अयोग्य घोषित करते हुए पद से हटा दिया।जिला आयुक्त कार्यालय की पंचायत शाखा द्वारा जारी आदेश के अनुसार, अतिउर रहमान नामक व्यक्ति द्वारा दायर शिकायत के आधार पर मामले की जांच कराई गई। जांच की जिम्मेदारी सहायक आयुक्त टी. चेतिया (ACS) को सौंपी गई थी।जांच रिपोर्ट में कहा गया है कि अब्दुर रहमान की एक से अधिक जीवनसंगिनियों से दो से अधिक जीवित संतान हैं। उनकी तीसरी संतान सुहान अहमद का जन्म ४ जून २०२५ को उनकी दूसरी पत्नी से हुआ था।आदेश में कहा गया है कि यह मामला असम पंचायत अधिनियम, १९९४ की धारा १११(२)(क) का स्पष्ट उल्लंघन है। इस प्रावधान के अनुसार, एक या एक से अधिक जीवनसंगिनियों से दो से अधिक जीवित संतान रखने वाला कोई भी व्यक्ति ग्राम पंचायत, आंचलिक पंचायत या जिला परिषद का सदस्य, अध्यक्ष अथवा उपाध्यक्ष बनने या पद पर बने रहने का पात्र नहीं है।इसी आधार पर जिला आयुक्त ने अब्दुर रहमान को तत्काल प्रभाव से वार्ड सदस्य के पद से हटा दिया तथा उनकी सीट रिक्त घोषित कर दी।इस फैसले के बाद मतिरचर ग्राम पंचायत के संबंधित वार्ड में रिक्त हुई सीट को भरने के लिए चुनावी प्रक्रिया शुरू होने की संभावना है। उल्लेखनीय है कि अब्दुर रहमान मतिरचर ग्राम पंचायत के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य कर रहे थे।

युवा शक्ति क्लब के सदस्यों ने दो दिनों में महादेवबाडी लेन की सडक़ की मरम्मत की, स्थानीय लोगों को मिली राहत

प्रे.सं. शिलचर, २४ जुलाई: आश्रम रोड के अंतर्गत महादेवबाडी लेन की जर्जर सडक़ की मरम्मत कर युवा शक्ति क्लब के सदस्यों ने स्थानीय लोगों को बडी राहत पहुंचाई। गुरुवार और शुक्रवार को क्लब के युवाओं ने करीब २०० मीटर लंबी सडक़ पर पत्थर डालकर ग्ों को भरा और उसे आवागमन के योग्य बनाया।बरसात के मौसम में सडक़ पर अत्यधिक कीचड.और ग्ों के कारण स्थानीय लोगों को लंबे समय से भारी परेशानी का सामना करना पड.रहा था। स्कूली बच्चों, मरीजों और आम राहगीरों का आवागमन भी प्रभावित हो रहा था।क्लब के सचिव जीत दास ने बताया कि पिछले कई वर्षों से हर बरसात में महादेवबाडी लेन के निवासी इस समस्या से जूझ रहे थे। स्थानीय लोगों की परेशानी को देखते हुए क्लब के सदस्यों ने आपसी सहयोग से सडक़ की मरम्मत करने का निर्णय लिया।इस कार्य में क्लब के अध्यक्ष गोविंद दास सहित कार्यकारी सदस्य रितेश दास, राहुल दास, साइमूल दास, अपूर्व हलदार, राजू दास, यीशु दास, सुजीत दास, देबू दास और जयंत दास समेत अन्य सदस्यों ने सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। सदस्यों ने अपने समय और संसाधनों का उपयोग करते हुए सडक़ पर पत्थर डालकर ग्ों को भरा और कीचड.की समस्या को दूर किया।स्थानीय निवासियों ने युवा शक्ति क्लब के सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सडक़ की मरम्मत से उन्हें बडी राहत मिली है। अब बच्चों के स्कूल जाने और दैनिक आवागमन में काफी सुविधा होगी। क्लब के सदस्यों ने कहा कि वे भविष्य में भी जनहित के कार्यों में सक्रिय भागीदारी करेंगे तथा स्थानीय प्रशासन के सहयोग से क्षेत्र की समस्याओं के स्थायी समाधान का प्रयास जारी रखेंगे।

जोरहाट एडमिनिस्ट्रेशन ने बाढ. प्रभावित इलाकों में राहत के उपाय तेज. किए

जोरहाट: (अर्णव शर्मा) २४ जुलाई : जोरहाट जलि़ा एडमिनिस्ट्रेशन ने बाढ.प्रभावित इलाकों में राहत और पुनर्वास के काम तेज.कर दिए हैं। कई सरकारी डिपार्टमेंट मिलकर बाढ.के बाद प्रभावित लोगों को जरूरी सर्विस देने और जानवरों की सुरक्षा के लिए काम कर रहे हैं।

पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग (PHE) डिपार्टमेंट ने बाढ.प्रभावित गांवों में साफ.पीने का पानी सप्लाई करने की अपनी कोशिश जारी रखी है, ताकि पानी से होने वाली बीमारियों को रोका जा सके और बेघर हुए परिवारों को पीने का पानी मिल सके।

बाढ.के बाद जलि़ा एडमिनिस्ट्रेशन के रिस्पॉन्स के हिस्से के तौर पर, जलि़ा एनिमल हस्बैंड्री और वेटेरिनरी डिपार्टमेंट प्रभावित इलाकों में जानवरों की सुरक्षा और उन किसानों की मदद के लिए खास एनिमल हेल्थ कैंप लगा रहा है जिनकी रोजी-रोटी बाढ.से प्रभावित हुई है।बोरहोला स्टेट वेटेरिनरी हॉस्पिटल के तहत अरंगियाल गांव में बाढ.के बाद एक एनिमल हेल्थ कैंप सफलतापूर्वक लगाया गया। जोरहाट से आई एक मोबाइल वेटेरिनरी टीम ने यह कैंप लगाया, जिसमें लगभग ९० बाढ.प्रभावित परिवारों के जानवरों को जानवरों की देखभाल, बचाव का इलाज और जरूरी दवाइयां दी गईं। एक और पहल में, टिओक रेवेन्यू सर्कल में बलोमा स्टेट वेटेरिनरी हॉस्पिटल के तहत बलोमा पाथर और डोलाखोरिया गांवों में मिलकर एक खास वेटेरिनरी हेल्थ और दवा बांटने का कैंप लगाया गया। वेटेरिनरी टीमों ने जानवरों की जांच की, बचाव की दवाएं दीं और बाढ.के बाद के समय में जानवरों के मालिकों को बीमारियों से बचाव के बारे में सलाह दी।इस बीच, जिला प्रशासन ने टिओक रेवेन्यू सर्कल के तहत कई बाढ.प्रभावित इलाकों में तिरपाल भी बांटे हैं, ताकि उन परिवारों को कुछ समय के लिए रहने की जगह मिल सके जिनके घर बाढ.के पानी में डूब गए हैं या उन्हें नुकसान हुआ है।इमरजेंसी बांटने का मकसद बेघर हुए लोगों को बारिश, खराब मौसम और दूसरी खराब स्थितियों से तब तक बचाना है जब तक हालात सामान्य नहीं हो जाते।जोरहाट जिला प्रशासन ने कहा कि बाढ.प्रभावित इलाकों में पीने के पानी की सप्लाई, वेटेरिनरी हेल्थकेयर, रहने की जगह में मदद और दूसरी जरूरी सेवाओं सहित राहत अभियान जारी रहेंगे ताकि लोगों और उनके जानवरों दोनों की सुरक्षा और भलाई पक्की हो सके।

बोरो बेकेरा में 'ए डे विद कंपनी कमांडर' कार्यक्रम का आयोजन, असम राइफल्स ने नागरिक-सैन्य समन्वय को किया मजबूत

प्रे.सं. जिरीबाम/बोरो बेकेरा, २४ जुलाई । असम राइफल्स ने बोरो बेकेरा में 'ए डे विद कंपनी कमांडर' कार्यक्रम का आयोजन कर जिरीबाम और फेजरवाल जिलों के विभिन्न नागरिक समाज संगठनों (सीएसओ) के प्रतिनिधियों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में संवाद स्थापित किया। कार्यक्रम का उद्देश्य नागरिकों और सुरक्षा बलों के बीच आपसी विश्वास, सहयोग और बेहतर समन्वय को बढावा देना था।कार्यक्रम की शुरुआत वॉलीबॉल मैच और रस्साकशी जैसी खेल प्रतियोगिताओं से हुई, जिनमें असम राइफल्स के जवानों और सीएसओ प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। खेल गतिविधियों ने टीम भावना, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और सुरक्षा बलों तथा स्थानीय समुदाय के बीच लंबे समय से चले आ रहे संबंधों को और अधिक मजबूत किया।इसके बाद सामुदायिक भोज का आयोजन किया गया, जिसने सभी प्रतिभागियों को अनौपचारिक रूप से विचारों के आदान-प्रदान और आपसी संवाद का अवसर प्रदान किया।

कार्यक्रम के दौरान एक सुरक्षा बैठक भी आयोजित की गई, जिसमें क्षेत्र की वर्तमान सुरक्षा स्थिति, स्थानीय समुदाय की चिंताओं तथा क्षेत्र में शांति, स्थिरता और विकास को और सुदृढ.बनाने के उपायों पर विस्तृत चर्चा हुई।

बैठक में उपस्थित नागरिक समाज संगठनों के प्रतिनिधियों ने असम राइफल्स की जनसंपर्क एवं जनभागीदारी आधारित पहल की सराहना करते हुए सुरक्षा बलों के साथ निरंतर समन्वय बनाए रखने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रकार के नियमित संवाद से दोनों पक्षों के बीच आपसी विश्वास और अधिक मजबूत होगा तथा स्थानीय समस्याओं का समाधान सहयोग और संवाद के माध्यम से समय पर संभव हो सकेगा।असम राइफल्स ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम नागरिक-सैन्य संबंधों को सुदृढ. करने, स्थानीय समुदाय के साथ विश्वासपूर्ण साझेदारी विकसित करने तथा क्षेत्र में स्थायी शांति, सुरक्षा और समग्र विकास को बढावा देने की उनकी निरंतर प्रतिबद्धता का प्रतीक हैं।

न्यू मार्केट और फाटक बाजार का नगर निगम आयुक्त अंकुर दास ने किया निरीक्षण

प्रे.सं. शिलचर, २४ जुलाई। नव नियुक्त शिलचर नगर निगम आयुक्त अंकुर दास ने शहर के दो प्रमुख वाणिज्यिक केंद्रों्न्यू मार्केट और फाटक बाजार्का निरीक्षण किया। यह कार्यभार संभालने के बाद उनका इन दोनों बाजारों का तीसरा दौरा था।निरीक्षण के दौरान आयुक्त ने बाजारों की साफ-सफाई, कचरा प्रबंधन, जल निकासी व्यवस्था, अवैध अतिक्रमण तथा आम लोगों के आवागमन से जुडी समस्याओं का जायजा लिया। उन्होंने सिलचर फूड ग्रेन्स एसोसिएशन और फाटक बाजार मर्चेंट्स एसोसिएशन के व्यापारियों के साथ बैठक कर उनकी समस्याएं और सुझाव भी सुने।अंकुर दास ने कहा कि शहर के बाजारों को अधिक स्वच्छ, व्यवस्थित और जनहितैषी बनाने के लिए नगर निगम प्राथमिकता के आधार पर कार्य करेगा। उन्होंने पारदर्शिता बनाए रखते हुए विकास कार्यों को आगे बढाने का भी आश्वासन दिया।शहर के इन दोनों व्यस्त बाजारों में नगर निगम आयुक्त के लगातार निरीक्षण को व्यापारियों और आम लोगों ने सकारात्मक कदम बताया है। अब लोगों की नजर इस बात पर है कि घोषित विकास योजनाओं को कितनी तेजी से धरातल पर उतारा जाता है।

मुद्रक, प्रकाशक व स्वामी श्री दिलीप कुमार द्वारा भारती ऑफसेट मुद्रणालय, कटहल रोड, शिलचर-05 (असम) से मुद्रित व प्रकाशित, सम्पादक-श्रीमती सीमा कुमार, Ph & Fax (03842) 242633, (M) 9435213512